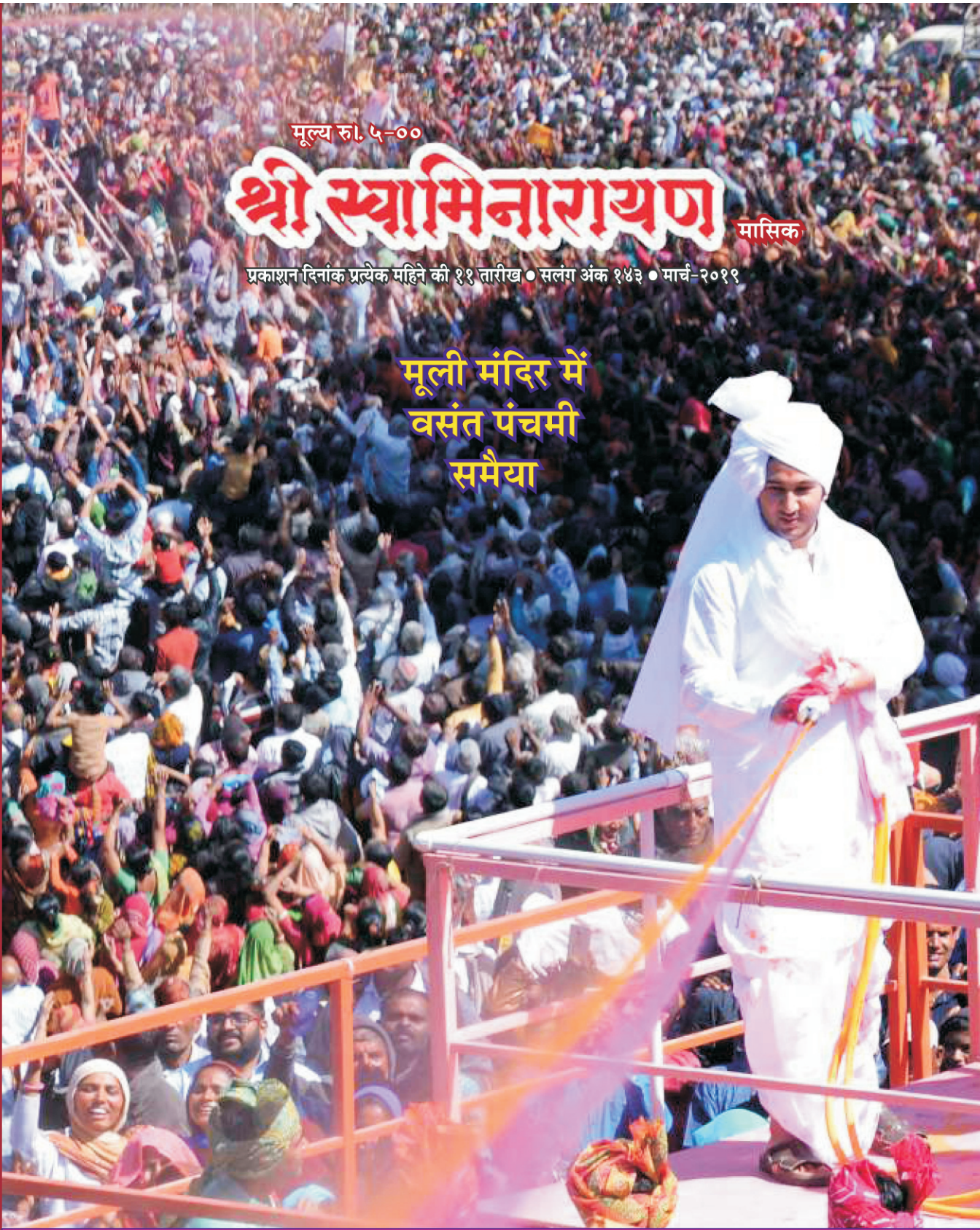

मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १४३ • मार्च-२०१९

मूली मंदिर में वसंत पंचमी समैया

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) द्रोन्द मंदिर के शताब्दी पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का पूजन करते तथा सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के युवक. (२) मेहसाणा मंदिर के शताब्दी पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करके और सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री. (३) जामफलवाडी मंदिर पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन. (४) बिहार मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री. (५) डिसोदर में पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी अभिषेक करते हुए संत और बाल शिबिर के अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन करते यजमान परिवार.

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १२ ● अंक : १४३
मार्च-२०१९

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	तोरणा के रणछोड भगत	०६
०४.	धर्मपुत्र का ध्यान करे	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वचन में से	१०
०६.	नारणपुरा (अहमदाबाद) मंदिर संकल्प मूर्ति श्री घनश्याम महाराज का भव्य और दिव्य रजत जयंती महोत्सव	१३
०७.	कुमकुम का चाँदला	१९
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	२०
०९.	सत्संग बालवाटिका	२२
१०.	भक्ति सुधा	२४
११.	सत्संग समाचार	२६

अस्मदीयम्

हमारा देश आज कल पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद के सामने लड़ रहा है। अभी १४ फरवरी को कश्मीर के पुलवामा में हमारे ५० जितने सैनिक आतंकवादी हमला में वीरगति को प्राप्त हुए है। विश्व के कई देशो ने इस घटना की भर्त्सना किये है। हम सब अपने देश के साथ है। हमारे देश के प्रधान मंत्रीने जवानो के बलिदान का एक बूंद भी व्यर्थ नही जायेगा। इसका बदला अवश्य लिया जायेगा और शीघ्रातिशीघ्र लिया जायेगा। और २६-२-१९ के दिन हमारे वीर जवान-कमान्डो ने रात्रि ३ बजे पाकिस्तान में घुसकर आतंकवादियो के अड्डे का नाश किया। हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अपने शहीद जवानो के परिवार के लिये कालुपुर मंदिर की तरफ से १५ फरवरी को त्वरित पच्चीस लाख का चेक सैनिक फंड में जमा कराये है। उसी प्रकार अपना आई.एस.एस.ओ. की अच्छी रकम तथा अपने छोटे-बडे मंदिरो से फंड इकट्ठा करके प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से शहीदो के परिवार के लिये दिया गया है। हम लोग तो अपने बड़े उत्सवो में अन्नकूट प्रसाद, फल इत्यादि शाहीबाग मिलीट्री कैम्प में प.पू. लालजी महाराजश्री और पू.श्रीराजा स्वयं कैम्प में जाकर देते है। यह सेवा श्रीजीमहाराज के समय से प्रवृत्ति चलती है।

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण से हम सभी प्रार्थना करे कि आतंकवाद का शीघ्रातिशिघ्र अंत आये। और समस्त विश्व सुख-शांति से रहे।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा समस्त संत और हरिभक्त हमारे देश के जवानो की आत्मा को शांति और मिले तथा आत्मा को परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान निजधाम में रखे। तथा परिवार वालो को धैर्य और बल दे। और समस्त देश में शांति आये ऐसी प्रभु के चरणो में वंदना करे।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०१९)

१	कुहा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव-शाकोत्सव अवसर पर आगमन।
३	श्री स्वामिनारायण मंदिर नारदीपुर पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
६	मेडा गाँव में सत्संग सभा में आगमन।
७	श्री स्वामिनारायण मंदिर लीलापुर (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।
८	श्री स्वामिनारायण मंदिर ऊँझा मूर्ति प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।
९	श्री स्वामिनारायण मंदिर पोरडा (कठलाल) मूर्ति प्रतिष्ठा पर आगमन।
१०	श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली पाटोत्सव और वसंतोत्सव-रंगोत्सव अवसर पर आगमन।
११	श्री स्वामिनारायण मंदिर ट्रेन्ट शताब्दी पाटोत्सव महोत्सव पर आगमन।
१२	श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद पाटोत्सव कथा पर आगमन।
१३-१४	श्री स्वामिनारायण मंदिर नाना आगिया (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।
१५	श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा संकल्प मूर्ति श्री घनश्याम महाराज रजत जयंती पाटोत्सव महामहोत्सव प्रसंग पर आगमन।
१६	श्री स्वामिनारायण मंदिर बिजापुर पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
१८	श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली (अहमदाबाद) पाटोत्सव पर आगमन।
२०	श्री स्वामिनारायण मंदिर झूंडाल मूर्ति प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।
२१	श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाना दशाब्दी पाटोत्सव पर आगमन।
२३	श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट पाटोत्सव पर आगमन।
२५	श्री स्वामिनारायण मंदिर भाउपुरा पाटोत्सव पर आगमन।
२६	श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा पाटोत्सव पर आगमन।
२८	श्री स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल पाटोत्सव पर आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०१९)

३	दियोदर (बनासकांठा) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव-कथा अवसर पर आगमन।
४	श्री स्वामिनारायण मंदिर पोरडा भाटेरा मूर्ति प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।
९	श्री स्वामिनारायण मंदिर ट्रेन्ट शताब्दी पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
१०	श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी के समैया पर आगमन।
१२	श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा रजत जयंती महोत्सव पर आगमन।
१३	श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा पाटोत्सव पर आगमन।
१७	श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाणा दशाब्दी पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
२२	हर्षद कोलोनी पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
२४	राजपुर गाँव में आगमन।
२६	श्री स्वामिनारायण मंदिर विहार पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

તોરણાના રણછોડ ભગત

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

वचनामृत शास्त्र के अन्दर लोया प्रकरण के ६ में स्वयं श्रीजीमहाराजजी कहते है कि ''जिस शास्त्र में भगवान का सगुण प्रतिपादन नही हुआ हो तथा भगवान के अवतार का निरुपण न हुआ हो । और जो ग्रंथ शुद्ध वेदांत न हो तथा जो ग्रन्थ विद्वान लिखे हो इस तरह के ग्रन्थ को कभी नही पढना चाहिए तथा सुनना भी नहीं चाहिए । और यदि रणछोड जैसे भक्त के कीर्तन ही है तथा भगवान की मूर्ति का वर्णन हो उसे ही गाना और सुनना चाहिए । इसी प्रकार के ग्रन्थ हो उसे पढना और सुनना चाहिए ।(लोया प्र.-६)

ये रणछोड भक्त कौन है ? किस समय में पैदा हुए थे ? और उनके लिखे हुए भजन कैसे है । जिसकी प्रशंसा भगवान स्वयं किये ऐसे भक्त के जीवन के बारे में कुछ जाने ।

रणछोड भगत का आश्रम खेडा जिले के कपडवंज तालुका के तोरण गांव में हुआ था । लेकिन रणछोड भगत का जन्म स्थान तोरण में नही वहाँ से ६.५ कि.मी. दूर आये खड़ाल गाँव में हुआ था । जिसका उल्लेख अपने काव्य में किये है ।

"खरी दया ने खडाल गाम, नरसई सुतनुं रणछोड नाम"

(ब्रह्म स्तुति)

भगत जाति से खड़ायता बनिया थे । भक्त हो जाने से भगत उप जाति हो गये । इनके पूर्वजो का उपनाम महेता थे । पिताजी का नाम नरसिंह महेता था । खडाल गाँव में रणछोड भगत जीवन व्यापारी बनिया थे । साथ ही साथ भजन का व्यापार भी था । स्वयं वैष्णव धर्म वाले थे । डाकोर के रणछोडजी के अनन्य भक्त प्रति पूर्णिमा के दिन डाकोर पैदल जाते थे । उनका अधिकतम जीवन खडाल गाँव में बीता था । वही पर रहकर काव्य-भजन की रचना की थी । भगत को खडाल को छोडकर तोरणा क्यो आये । उसकी एक कारण युक्त अवसर माना जाता है ।

रणछोड भगत खडाल गाँव में गोपाल महेता की गली में व्यापार और पैसे लेने-देने का कार्य करते थे । लेकिन उनकी साख एक भगत की थी । एकबार विधवा औरत को गाँव से बाहर जाना पडा । औरत के पास गहनो का डिब्बा (दाबडा) था । वह उसे सम्भालने के लिये रणछोड भगत के पास आयी । भगत से बोली ''मैं बाहर गाँव जा रही हूँ । आप इस गहने के डिब्बे को सम्भालियेगा, जब मैं वापस आऊगी तब इसे ले जाउगी'' भगत उस समयपूजा करने बैठे थे । वह बैठे ही बैठे बोले ''उस पटरी पर रख दो'' औरत ने डिब्बा को पटरी पर रख दी और चली गयी । भगत आँख बंद करके ध्यान करने लगे । भगत के घर के सामने एक सोनी रहते थे । भगत को ध्यान में बैठे देख कर उसको मन चंचल हो गया वह घर में जाकर डिब्बा उठा ले गया । घर में लाकर गोबर के ढेर में छिपाकर अपने काम मे लग गये । डुआ ऐसा कि वह औरत बाहर जाने का कार्यक्रम निरस्तकर दी । स्वाभाविक है वह अपना गहनो का डिबा वापस लेने आई । भगत वही से बैठ-बैठे बोले

कि जहाँ रखी हो वहाँ से ले लो । औरत पटरी देखी तो वहाँ डिब्बा नही था । वह भगत से बोली ''मेरा डिब्बा वहीं नही है'' भगत आश्चर्य चकित हो गये । डिब्बा कहा गया ? औरत गुस्से में आ गई । भगत को चोर मान बैठी । खड़ाल के दरबार मियाँ मकवाणा से शिकायत की । दरबार सच्ची बात बताने के लिये चेतावनी दी तथा जेल भेजने की धमकी भी दी थी । भगत स्वयं निर्दोष होने की बात कहे तथा श्रीरणछोडरायकी प्रार्थना करके सहायता माँगे । तत्काल भगवान साधु के भेष में वहाँ आये । और दरबार से बोले सहीचोर तो सोनी है और भगत निर्दोष है । वह बताकर वह अदृश्य हो गये । दरबार भगत से माफी मांगे । लेकिन भगत संसार से उदासीन हो गये तथा बैरागी बन गये । अब तो मुझे डाकोर के ठाकुर के दरबार में रहना है और कही नही रहना है । ऐसा निर्णय करके खडाल छोडकर डाकोर जाने के लिये तैयार हो गये । रास्ते में तोरण गाँव आया । वहाँ के प्रेमी भक्तो का रणछोड भगत के साथ लगाव था । उन लोगो के आग्रह से एक रात रुके । उसी रात में भगत के सपने डाकोर के ठाकुरजी दिखाई दिये । और बोले ''तोरणा में एक जगह पर (वर्तमान में वहाँ पर मंदिर है) मेरी मूर्ति है । जमीन में सेनिकाल कर हमारी प्रतिष्ठा करवाना हमारी सेवा और पूजा करना । ऐसी आज्ञा दिये । पहले तो सपना माने लेकिन फिर सपना आया । प्रातः सभी पटेलो को एकत्र किये । खुदाई करने पर वहाँ से श्री लक्ष्मीनारायण, हनुमानजी और गरुडजी की प्रतिमा प्राप्त हुई । सभी लोग भाव विभोर हो गये । गाँव के लोग तोरणा में ही डाकोरजी की स्थापना करने के लिये जमीन तथा अन्य खर्च देने का निश्चय कर दिया गया । लोगो के आग्रह तथा प्रभु आज्ञावश रणछोड भगत तोरणा में रहने के लिये तैयार हुए और श्री रणछोडरायजी का सुंदर मंदिर बनाया गया जो आज भी मौजूद है।

रणछोड भगत के जीवन में अन्य दूसरे भी कई प्रसंग है । जिस में भगवत्कृपा चमत्कार हुए है । जैसे डाकोर के मंदिर के द्वार का खुल जाना । भगत के पुत्र नारायणदास और कृष्णदास के विवाह का खर्च भगवान स्वयं आकर दे गये थे । द्वारिका मंदिर के चददर को जलने पर बुझा दिये थे । ऐसे कई प्रसंग भगत के जीवन में घटी थी ।

रणछोड भगत द्वारा रचित पदो की संख्या सैकडो है । ये कृष्ण भक्ति से भरे है । श्रीकृष्ण के जीवन व्यक्तित्व के लीलाओ को विषय बनाकर उनके पद, भजन, ढोल, रास, थाल, आरती, स्तुति की रचना किये थे । उसमें ''वसंत के पद'', ''शणगार के थोल'', ''दान के पद'', ''अमृत फलना धोल'', ''हिंडोला ना पदो'', ''जन्माष्टमी की बधाई'', ''श्री राधिकाजीकी बधाई'', ''रास के पद'', ''वृन्दावन महात्म'', ''स्त्रोत'', ''बारमासी'', ''स्नेहलीला'', ''गोवर्धन ओच्छव'', ''वणुगी'',''राधा-विवाह'',''रणछोडजी का गरबा'', ''राधिका की रासवाणी'', ''चातुरी'', ''रास पंचाध्यायी'' और ''कृष्णजीवन की महिमा'' जैसी विशेष कृतियाँ है । ये ज्ञानी भी भक्त थे । उन्होने 'केवल रस', ''प्रभात स्तवन'', ''कक्को'', ''चेतामणि-शिक्षाअंग'', ''करमाना दोहरा-शिक्षा अंगणी'', ''मनुष्य देह की महिमा'', ''ताजणा'' (साटका चाबखा) नामक कृति ज्ञानमार्गी तथा वैराग्य उपदेशक कविता है । अन्य अऴतारपरक ''दशावतार लीला'', ''सीतावेल'', ''रामायण के प्रसंग बिदुर का प्रसंग'', ''राम जन्म बधाई''स ''ब्रह्मस्तुति'', ''भक्त विरदावली'', ''नाचिकेताख्यान'' इत्यादि रचना भी प्रसिद्ध है।

रणछोड भक्त के समकालीन भक्त द्वारकादासने उनके बारे में लिखे है । ''जुनागढ के नरसई नागर, तेनो तु अवतार'', ऐसे रणछोड भक्त के काव्यो में नरसिंह महेता की झलक दिखाई देती है।

तोरणा के रणछोडराय मंदिर की गद्दी के उपर आज भगत वंश के 'बलदेवदास'जी महंत है । जिसे लोग 'भगतजी' प्यारे नाम से जाने जाते है । उन बलदेवदासजीने 'रणछोड भक्त की वाणी' नामक पुस्तक के पाँच भाग प्रकाशित किये है । जिस कारण से रणछोड भगत द्वारा रचित पद आज भी अपने पास है । रणछोडरायजी की मूर्ति आज भी तोरणा गाँव में बिराजमान है । लोग रणछोडरायजी की पूनम में लोग आते है । भगवान उनकी मनोकामना पूर्ण होती है।

(पेईज नं. १२)

धर्मपुत्र का ध्यान करे

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

श्रीधर्मसद्मन्यवतीर्य विष्णुर्यो वासुदेवो हरिकृष्ण ईशः ।
श्रीनिलकण्ठोऽत्रपुनाति मर्त्यान् ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥१॥
यस्य स्वरुपे तिललक्षणानि स्वभक्तचेतांसि हरन्ति यद्वत् ।
अयांसिचाकर्षमणिप्रवेका ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥२॥
यस्याक्षरे धाम्नियत्प्रसक्ताः क्रीडन्ति दिव्येऽक्षरसंज्ञमुक्ताः ।
सम्राट्तनुजा इवसर्व मान्या ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥३॥
यस्यायस्यपद्मेऽद्भुतभूरिशोभे वसन्ति नेत्रभ्रमरा जनानाम् ।
हंसायथा मानसपद्मवृन्दे ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥४॥
यः पोषयत्यत्र निजान स्वकीयज्ञानोपदेशेन सुधोपमेन ।
वत्सान् सुशिला पयसा यथा गौः ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥५॥
पाखण्डधर्माद्युदयेन यस्य शाक्ताः व्यलीयन्त यथोदितेऽर्के ।
घूका वृषद्वेषिण एव चान्ये ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥६॥
यत्पादपमेऽक्षरमुक्तचेतो भृगां रमन्ते सरसीवमीनाः ।
आसेव्यमाने भुवि भूरिभक्तैः ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥७॥
यदीयसौन्दर्यगुणादिपारं शेषादयो यान्ति यस्य भक्ताः ।
वांच्छन्तिनाप्यक्षरसौख्यमन्तः ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥८॥

स्त्रग्धरावृत्तम् ॥

गोपालानन्दनाम्ना रचितमतिशुभंत्वष्टकं सन्मयेदं प्रीत्यै श्री धर्मसूनोः प्रगटभगवतः स्वामिनारायणस्य ।
तन्महात्म्यावबोधं य इदमिह जनः श्रावयेत्कीर्त्तयेदवा स स्यादवै ब्रह्मरुपः हरिरतुलमुदं चाप्नुयात्तत्र धार्मिः ॥९॥

भगवान श्री स्वामिनारायण के हृदय की बात समझ कर उसी अनुसार सम्प्रदाय में उसी तरह उपासना, ज्ञान का प्रवर्तक यदि कोई है तो वह अक्षरमूर्ति सद्गुरु गोपालानंद स्वामी है । जिन्होने श्री स्वामिनारायण भगवान को और इस सम्प्रदाय को और दोनो आचार्यो की देखभाल का अनुसंसा की थी । स्वामीश्री जगत में आत्यन्तिक मोक्ष की ईच्छा वाले सभी जीव मात्र को अपने हृदय में ध्यान करने वाला स्वरुप है । तो वह साक्षात् धर्मदेव के पुत्र स्वरुप इस कलियुग में मनुष्य शरीर धारण करके प्रगट प्रमाण पृथ्वी पर विचरण करते हुए भगवान श्री स्वामिनारायण की दिव्य मूर्ति ही है । और उन मूर्तियो की कैसी अलौकिक प्रताप है । उसे समझने के लिये स्वामीजीने जिस प्रकार से श्रीहरि का प्रताप और ऐश्वर्य है । उसका वर्णन करने के लिये एक सुंदर उपजाति छन्द में संस्कृत भाषा में मधु अष्टक की रचना किये है । उसका सरल अर्थ समझने के लिये प्रयत्न करना आवश्यक है । तो इसे देखे कैसा मधुर है ।

श्रीधर्मसद्मन्यवतीर्य विष्णुर्यो वासुदेवो हरिकृष्ण ईशः ।
श्रीनिलकण्ठोऽत्रपुनाति मर्त्यान् ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥१॥

इस भयानक कलियुग में छपैया गाँव के निवासी जो धर्मदेव हरिकप्रसाद विप्र के घर प्रगट हुए है । वे साक्षात् विष्णु है । वासुदेव है । हरिकृष्ण है । ईश्वर । श्री नीलकंठ है । ये पाँचो विशेषण देकर स्वामीने सभी अवतारो के अवतार और सर्वत्र व्यापक अनंत कोटि ब्रह्मांडो की उत्पत्ति स्थिति और पालन करने वाले परम ब्रह्म परमात्मा सभी कारणो के कारण ऐसे परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्री कृष्ण पुरुषोत्तम नारायण है । फिर भी सभी जीव प्राणी का हित करने के लिये तथा मोक्ष प्रदान करने के लिये मानव शरीर धारण करके विचरण करते है । वे धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि भगवान श्री स्वामिनारायण का में अपने हृदय से स्मरण चिन्तन रुप का ध्यान करता हूँ ।(१)

यस्य स्वरुपे तिललक्षणानि स्वभक्तचेतांसि हरन्ति यद्वत् ।
अयांसिचाकर्षमणिप्रवेका ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥२॥

भगवान श्रीहरि द्वारा धारित मानव देह में जैसे चुम्बक लोहे के पर्थ को खीच लेता है, उसी प्रकार अपने सभी भक्तो को जो दर्शन करता हे उसका मन अपनी तरफ आकर्षित कर लेते है । ऐसे शरीर में श्रीहरि तिल के प्रतीक, और लाख प्रतीक धारण किये है । भगवान को पहचानने वाले शास्त्रो में वर्णित प्रतीक चरणारविंद के सोलह प्रतीक के उपरांत शरीर के उपर कई सामुद्रिक शास्त्र में वर्णित सभी प्रतीक मिलते है । ऐसे धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि भगवान श्री स्वामिनारायण का में हृदय से स्मरण चिन्तन रुप का ध्यान करता हूँ ।(२)

यस्याक्षरे धाम्नियत्प्रसक्ताः क्रीडन्ति दिव्येऽक्षरसंज्ञमुक्ताः ।
सम्राट्तनुजा इवसर्व मान्या ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥३॥

अक्षरधाम ऐसे नाम जैसा जिसका धाम है । वह सभी धामो से अळग है । इस अक्षरधाम की तुलना किसी धाम से नही की जा सकती है । इस अक्षरधाम में जो भक्त श्रीहरि का आश्रय लेता है । इस दिव्य अक्षरधाम में गये भक्त का नाम अक्षरमुक्त जैसा होता है । उस धाम में गये भक्त क्या करते है वहाँ पर विराजमान परमब्रह्म

परमात्मा का द्विभुज दित्य सदा आकर स्वरुप की सदा सवर्दा सेवा रुपी क्रीडा क्रिया करके उसका रंजन करते है । उन अक्षर मुक्तो का सामर्थ कैसा है । जैसे चक्रवर्ती सम्राट के राजकुमार को सभी शासक सन्मान देते है । उसी प्रकार अक्षर मुक्त को को सर्व ब्रह्मांड के नियन्ता उत्पात स्थित प्रलय करने वाला अक्षर मुक्त को सन्मान देते है। उनकी सभी आज्ञा का पालन करते है। ऐसे धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि भगवान श्री स्वामिनारायण का में हृदय से स्मरण चिन्तन रुप का ध्यान करता हूँ।(३)

यस्यायस्यपद्मेऽद्भुतभूरिशोभे वसन्ति नेत्रभ्रमरा जनानाम् ।
हंसायथा मानसपद्मवृन्दे ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥४॥

भगवान श्री स्वामिनारायण का यह दिव्य मनुष्यधारी शरीर की शोभा ऐसी है कि उनके मुखारविंद को देखकर मनुष्य के नेत्रो के समान मानसरोवर में भौरे कमल की सुगंधलेने में मग्न हो जाते है । सभी देखने वाली आँखो स्थिर हो जाती है । ऐसे अद्भुत कमल की पंखुडी जैसी विशाल उनकी आँखे है । धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि भगवान श्री स्वामिनारायण का में हृदय से स्मरण चिन्तन रुप का ध्यान करता हूँ।(४)

यः पोषयत्यत्र निजान स्वकीयज्ञानोपदेशेन सुधोपमेन ।
वत्सान् सुशिला पयसा यथा गौः ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥५॥

जैसे सुरभि कामधेनु गाय अपने बच्चे को अमृत समान मीठे दूधको पिलाकर पोषण और रक्षण करती है। उसी प्रकार भगवान श्रीहरि स्वामिनारायण भी अपने आश्रित भक्तो का अपने ज्ञानोपदेस वचनामृत से सभी प्रकार का पोषण करके आन्तरिक शत्रुओ से उनकी रक्षा करते है । धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि भगवान श्री स्वामिनारायण को मै हृदय में स्मरण प्रतीक के रुप ध्यान करता हूँ।(५)

पाखण्डधर्माद्युदयेन यस्य शाक्ताः व्यलीयन्त यथोदितेऽर्के ।
घूका वृषद्वेषिण एव चान्ये ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥६॥

पृथ्वी पर जब सूर्योदय होता है। तब सब अंधेरा मिट जाता है। उसी प्रकार इस पृथ्वी पर इस भयानक कलियुग में स्वयं भगवान श्री स्वामिनारायण स्वरुप में साक्षात् विचरण करते है । उनके प्रभाव से दुष्ट कर्म करने वाले और धर्म का अपमान करने वाले दमभ और आडम्बर करन वाले भोली प्रजा को ढगने वाले पाखंडियो जीव हिंसा करने वाले माँस मदिरा का भक्षण करने वाले ऐसे अधर्मियो का अपन आप विनाश जिसने किया हो । ऐसे धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि भगवान श्री स्वामिनारायण का मै हृदय में स्मरण चिंतन ध्यान करता हूं।(६)

यत्पादपमेऽक्षरमुक्तचेतो भृगां रमन्ते सरसीवमीनाः ।
आसेव्यमाने भुवि भूरिभक्तैः ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥७॥

जिस प्रकरा सुगंधित फूलो के मध्य भौरे गुंजन करते है । वैसे ही अपने दिव्य अक्षरधाम में अक्षर मुक्त चारो तरफ उनके गुण और ऐश्वर्य की सदैव गीत गाते है। वे ही परमब्रह्म, परमेश्वर आज पृथ्वी के उपर मानव शरीर धारण करके विचरते है। और असंख्य एकान्तिक भक्त उनके चारो तरफ गुणगान एवम् सेवा में लगे रहते है। धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि भगवान श्री स्वामिनारयण का में अपने हृदय में चिन्त ध्यान करता हूँ।(७)

यदीयसौन्दर्यगुणादिपारं शेषादयो यान्ति यस्य भक्ताः ।
वांच्छन्तिनाप्यक्षरसौख्यमन्तः ध्यायेहरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥८॥

स्वयं शेषजी साक्षात शारदा देवी माँ सरस्वतीजी भी उनके गुण एवम् ऐश्वर्य सौन्दर्य का पूर्ण वर्णन नहीं कर सकती है। जिस में अनन्त गुण आपार रुप सौन्दर्य का रसपान करते एकान्तिक भक्त दर्शन सेवा का सुख छोडकर अक्षरब्रह्म का सुख और वैभव की ईच्छा नही रखते है । उनके एकान्तिक भक्त किसी भी प्रकार का सुख या वैभव कभी नही चाहते है । ऐसे धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि भगवान श्री स्वामिनारायण का में हृदय से स्मरण चिन्तन रुप का ध्यान करता हूँ।(८)

स्त्रग्धरावृत्तम् ॥

गोपालानन्दनाम्ना रचितमतिशुभंत्वष्टकं सन्मयेदं प्रीत्यै श्री धर्मसूनोः प्रगटभगवतः स्वामिनारायणस्य ।
तन्महात्म्यावबोधं य इदमिह जनः श्रावयेत्कीर्त्तयेदवा स स्यादवै ब्रह्मरुपः हरिरतुलमुदं चाप्नुयात्तत्र धार्मिः ॥९॥

अक्षरमुक्त सद्गुरु श्री गोपालानंद स्वामी कहते है कि मैं जो इस अष्टक की रचना किया है। यह केवल मात्र मनुष्य देहधारी प्रगट प्रमाण श्रीहरि धर्मदेव के पुत्र भगवान श्री स्वामिनारायण के केवल प्रसन्नता के लिए ये शुभ गुण युक्त और सबका मंगलकारी इस अष्टक की रचना किये है । श्रीहरि के अपार महिमा वाला यह अष्टक जो कोई मनुष्य श्रद्धा भक्ति पूर्वक श्रवण करेगा, गान करेगा, तो सर्व ब्रह्मरुप होगा और अक्षरमुक्त की पदवी प्राप्त करेगा । ब्रह्म रुप होकर परमब्रह्म परमेश्वर का अष्टक का गानश्रवण करेगा उसके उपर धर्दमवे के पुत्र श्रीहरि भगवान श्री स्वामिनारायण निश्चित रुपे अति प्रसन्न होगे । ९)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वचन में से

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

संसार में लोग कई उपदेश देते है । कोई कहता है ऐसा करो, वैसा करो, फलाना करो, ये सब करने में भगवान कही पर भूल जाते है । हमारी भगवान हमें कितना सरल मिले है । अपने भगवान - जाति-पाँति देखे बिना सभी को जीवन जीने के सच्चे मार्ग बताये तथा सभी को सुखी किये है ।

बडी कंठी पहनने से या बडा तिलक लगाने से भक्त बडा सत्संगी नही हो जाता है । कंठी और तिलक प्रतिकात्मक भक्त है । तिलक यह बताता है कि हमे कहाँ जाना है ? दर्पण के उपयोग से तिलक की शोभा बढती है । लेकिन दर्पण में स्वयं को देखना चाहिए । वह अच्छा होता है । दर्पण हाथ में लेकर यहा निश्चित कर सकते है कहाँ जाना है ।उसकी मोटाई या परिमाण देखना नही है । मस्तक पर तिलक टेढा हो जाये वह भगवान देख लगे हम किसी को दिखाने के लियेनही करते है तिलक करना महत्व की बात है । आज कल बच्चे बाल को सेट करन के लिये घंटो दर्पण के सामने बैठे रहते है । फैशन के लिये बहनो को क्यो बदनाम करते हो ? बहन भी सोचती होगी कि अब दर्पण समाप्त हो । पाटोत्सव के अवसर पर सोचे की हमारे जीवन में कितना बदलाव आया है ? पूरे दिन मंदिर में रहने से भगवान भी शायद यह जाये । लेकिन भगवान को भूलना नही चाहिए । हम लोग इस लिये सुखी है कि हमे भगवान मिले है । सत्संग की धरोहर मिली है । उसे बचाना पडेगा । इससे छूट नही सकते है ।

मंदिर जाने पर उस मंदिर में जो भाव आता है वह भाव वापस लाना चाहिए । अपन घर में भले ही सिंहासन पर छोटे भगवान ही हो । उनके लिये थोडा समय अवश्य प्रदान करे । लेकिन होता ऐसा है कि हम अपने घर वाले भगवान को किनारे कर दिये है । वटाई पर खेत दे दे तो हमें केत नही सम्भालना पडता है । उसे दूसरा सम्भाल लेता है । हम लोग बहनो को बोल देते है कि दिया कर देना और आरती कर देना । हमें ऐसा लगता है कि हम उपर से आये हो । ऐसा संसार में होता है । औरते पाँच बजे उठ जाती है । स्वयं का नित्य कर्म, ठाकुरजी को नास्ता, बच्चे विद्यालय जाते हो तो उनकी तैयरी उसमें हमे मदद कते हुए कोई देख ले तो वेईज्जती लगती है । इतना तो याद रखे करने बाला कोई और है । पद के पीछे रहकर करता है । इस कारण यहाँ तक आये है । लगाकर नही निकलते है ।

इस गाँव में (मेरा की मुवाडी) देशी नलिया का मकान है । उनके पूर्वजो ने इस गाँव को बसाया था । उन्होने घर पक्का नही बनाया । लेकिन देवताओ के स्थल पक्के बनाये थे । आप संसार का इतिहास देखे प्रारम्भ में कही पर पक्के मकान और मांल नही बतने थे । भगवानमिले और उनको रखा गया तो हमे इतना प्राप्त हुआ । नही तो कोई ठिकाना नहीं रता त माल के लिये भगवान को न रखे । लेकिन इतना याद रखे की भगवान के बिना कुछ नही हो सकता है । हम एक श्वास भी नही ले सकते है । रात में सो जाने पर श्वास कौन चालु रखता है । नदीं से श्वास लेना भूल जाये तो प्रात, उठ सकते है क्या ? अर्थात भगवान सुरक्षा देते है ।

१० X १५ के कमले में जो सुख मिलता है वह बंगला में नही आता । है । बंगले में जाकर वही सुखी हुए हे जिन्होने भगावन को रखा है यदि वहाँ पर भगवान नही है तो लोग बंगले में भी दुखी रहते है । यदी कम से पूरा हो जाये तो क्या तकलीफ करे है । बड़े बंगले में खर्च अधिक होता है अब ऐसा करे, ऐसी क्रिया मृत्यु तक चलती रहती है फिर भी पूरा नही होता है । यदी सत्य है ।

देश में भ्रष्टाचार खत्म होने वाला नही है । क्यो कि काम कराने के लिये लालच करना हमारी आदत बन गई है । हम हनुमान की के समझ एक चम्मच तेल से कितना संकल्प करते है । हनुमानजी हमें क्या दैनिक पर

रखे है ? भगवान के सामने संकल्प न करे ? भगवान का दर्शन करें। काम होगा ही। दुख आये तो भगवान के पास जाये उससे अच्छा है कि सुख के समय भगवान के पास जाये तो दुख नही आयेगा। यह सत्य है। लेकिन सत्य यह है कि हमे जोखम लेने की आदत बन गई है।

सब चाल चले। कोई चाल बाकी नही रखे। केवल तीन मास तक १ मिनट के लिये मंदिर में जाकर भगवान का दर्शन करे तत्पश्चात देखे आप। हो तो दुकान बंद कर दे।(मंदिर जाना) में लिखकर दे देता हूं कि आप का परिवार सुखी हो जायेगा। बच्चे-बच्चियों एवम् परिवार पर अच्छा प्रभाव पडेगा। सोचने में बदलाव आयेगा। क्योंकि हमारे मंदिर में भगवान साक्षात् है। इस लिये दर्शन के लिये जितना समय मिले उतना दे। मंदिर आप का है तथा आप को सम्भालना है।

भगवान के सच्चे भक्त को कभी किसी से माँगता हुआ हो ऐसा हमने नही देखा है। मैं किसी भक्त को सडक पर माँगते नही देखा है। हाँ बडा कार्यक्रम हो और गलत व्यक्ति माला-तिलक युक्त जेब काटे यह अलग बात है। क्योकि यह उसका व्यापार है। सच्चे भक्त जेब नही काटता है। स्वामिनारायण भगवानने कहा है कि मेरा आश्रित अन्न, धन, वस्त्र और सम्मान से कभी दुखी नही होगा। विचार करे इतनी गारंटी लेने के लिये कोई तैयार है ? कोई इतनी अनपे बच्चे की इतनी गारंटी नही लेता है। हां सम्पत्ति का वील (वसियनामा) दे सकता है। भगवान कहे है कि विश्वास रखो कार्य अवश्य होगा।

सुख अंदर और हृदय में होता है। मनुष्य का सर दर्द के सिवाय कुछ भी नही देती है। में किस अवस्था में सो जाता हूँ पून, उठ जाता हूँ। इसी में सुखी हूँ। क्योंकि सब कुछ भगवान के उपर छोड दिया है। अपनी शक्ति है ? कहाँ क्या लिखा है ? ये निश्चित है ? एक घिस गयेट स्टाम्पर को बंद करते समय यदि अंगुली में थोडी चोट लग जाये तो काफी देर तक दर्द करती है। कोई अमरतत्व नही लेकर आया है। इस लिये भगवान के उपर सदा विश्वास रखकर जीवन बिताये। केवल भगवान ही क्यो ? भगवान के सच्चे भक्तो के उपर भी विश्वास रखे। आपस का सभी भक्तो पर विश्वास रखे तथा प्रेम करे लगाव और गुण ग्राही बनकर अच्छे से जीये। दोष-गुण से कोई अलग नही है। इस लिये अपने में एक दूसरे का दोष देखे बिना लगाव रखे, भगवान को साथ में रखकर उन्नति प्रगति करे।

आप को छोटे पुत्र-पुत्री अथवा पोते-पोती आप को पात्र में जलभरकर दे तो आप को कैसा लगता है। यह ही भगवान का स्वरुप होता है। बड़े लोग बच्चो की अंगुली पकड कर मंदिर ले जाये उस में नही बल्कि ये बच्चे अपने बड़ो को अंगुली पकडकर मंदिर में ले जाये ते सत्संग की सार्थकता है।

मंदिर और सत्संग के लिये समय निकालना पड़ता है। समय किसी के पास नही होता है हमारे पास भी नही है। मजदूर को मजूदर का काम दे दे उसी प्रकार प्रबन्धक, आर्किटेक्ट या वकील को उनका कार्य उन्हे सौप दे समय मिलेगा। चालाक होकर वकील की फाईल लेकर कहे कि इसका निर्णय यह होगा तो हो पायेगा। इसलिये महाराज कहे है कि जो जिस कार्य योग्य हो उसे वही कार्य दे।

कई वर्षो पहले इसी सभा मंडप में (अहमदाबाद मंदिर) २०-२५ हरिभक्त बैठकर खरमास में भजन कर रहे थे। बाद में बड़े संख्या नियमित धून में बैठना शुरु कर दिये। अर्थात् संख्या बढने लगी। आज ये विशाल सभा संत हरिभक्तो की भीड से भर जाता है। इतने अधिक हरिभक्त विशाल संख्या में रजाई चादर छोडकर ठंड में धुन में लिये बैठ जाते है ? यह कोई सरल नही है। देव को पहचाने होगे तभी ये भजन करते है। निष्ठा और सत्संग मजबूत होना चाहिए। संसार में कई जगह पर सत्संग होता है। लेकिन देव के सानिध्य में भजन हो महत्वपूर्ण है।

महाराजने शाकोत्सव किया था ।उनके स्मृति में हम शाकोत्सव करते है। नकल नही करते है। संसार मे कई कार्यक्रम चलते है। हम किसी का नकारात्मक नही

कह रहे है। लेकिन सिद्धान्त की बात ये है कि दोनो गद्दी के अभी तक जो आचार्य हुए है । उन सभी की ऊगली भगवान के तरफ रही है। कामकम या अधिक हो सकता है । किसी आचार्यने अपने सिद्धान्त से समझौता नही किये। शाकोत्सव का सीजन नही होता है। सीजन बैगन का होता है इसलिये मेरा ये मानना है कि, शाकोत्सव जहाँ तक हो सके देव के सानिध्य में हो अधिक अच्छा और अनुकरणीय है। आने वाले वर्ष में देव के प्रांगण में बड़ा शाकोत्सव मनायेगे। वाहन बाहर रखियेगा। में भी अपनी गाड़ी बाहर रखूँगा। पार्किग न मिलने पर पैदल चल कर आऊगा। भगवानने तो पैर दिये है। उस कारण से थोडा चले वैसे कदम कदम चलने से अश्वमेधयज्ञ का फल मिलता है। क्योकि महाराज के सन्मुख चलना है।

शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण करते-करते इस देव (नरनारायणदेव) सुनते है । ऐसा विचार करे । ये रोटी देव देते है। नही तो हम सभी को एकनिवाला भी नही मिले । संसार में देखे तो ज्ञात होगा । हमारे यहाँ लम्बी लाईन लगी रहती है। केवल प्रसाद के लिये। प्रातः श्रृंगार आरती में देव को (अहमदाबाद मंदिर) फल रखा जाता है। जो आप को प्रसाद रुप में मिलता है। प्रसाद की एक महिमा है।

आप को भगवान को चढ़ाये गये तुलसी दल देते है तो आप कितना खुश हो जाते हो। हमें तो पाटोत्सव के दिन भगवान को स्पर्श करने का अवसर मिलता है । महाराज का बचन है कि पाटोत्सव, पूनम और एकादशी मनाय ाजाता है। पत्रिका नही चाहिए। देव है तो हम सभी है। इस लिये हम सबको भगवान देखते है। भगवान पुनः नही मिलेगे । इस लिये नरनारायण का सहारा नही छोडना है। सौ बात की एक बात देव को हृदय में बसाये रखे। तथा वारसागत मे दे।

देव में सम्पूर्ण श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा रखे । वास्तव में यदि कल्याण होता होगा तो देव । नरनारायणदेव की शरण में जायेगे । किसी की शक्ति नही है कि कल्याण कर सके और श्राप दे सके । कई लोग नरक में भेजने का बीजा लेकर स्टेम्प लेकर बैठे है । वे दूसरे को श्राप देते है। ये स्वयं सम्भल के रहे ये बड़ी बात है । हम लोग तो देव के है । 'जेवा तेवा पण पुत्र तमारा अणसमझू अहंकारी हे.... ये नंद संतो के शब्द है। इस लिये देव का होकर रहेगे तो किसी का प्रभाव नही पडेगा।

अनु. पेईज नं. ७ से आगे

ऐसे महान भगवत्प्रेमी रणछोड भक्त का नाम सम्प्रदाय के शिरमौर शास्त्र वचनामृत में स्वर्ण अक्षरो में लिखा गया है । श्रीजीमहाराज जिस भक्त की रचना अपने मुख से कहे है वह प्रसाद बन जाता है।

सर्वावतारी श्रीहरि भक्त कवि रणछोडरायजी अगम वाणी को पूर्ण करने के लिये वि.स. १८६८ के साल में कठलाल से सत्संग-विचरण करते करते तोरणा गाँव में परमहंसो की मंडली लेकर आये थे। यहाँ के रणछोड भगत धाम में जाने से पहले अपने भक्तो से बोले थे कि भविष्य में जो भगवान प्रगट होगे वे मेरी गद्दी पर बैठेगे। इस लिये भक्त का वचन सत्य करने के लिये श्रीजीमहाराज उनकी जगह पर आये तथा रणछोडराय की गद्दी पर बिराजमान हुए। वहाँ पर उनके सेवकने कहा महाराज। महाराज ! आप भगत की गद्दी पर क्यो बैठे है ? श्रीजीमहाराज बोले हम भूल गये । रणछोड के भगत भगवान को पहचान नही सके। श्रीहरि मंदिर में सोने की मुहर मंदिर में दान किये थे। इस घटना को वर्तमान वंशज भगत अच्छी तरह से जानते है।

गाम तोरणामां मुक्तनाथ, धणा संत हरिजन साथ ॥
रणछोड भगतनी गादीपर, पोते बेठा छे श्याम सुंदर ॥

तोरणा गाँव अहमदाबाद से ५० कि.मी. दूर है। वहाँ पर श्रीहरि की प्रसादी की गद्दी का दर्शन होता है। वहाँ के सेवक भी जानते है कि यह आसन स्वामिनारायण भगवान की प्रसादी है।

नारणपुरा (अहमदाबाद) मंदिर
संकल्प मूर्ति श्री घनश्याम महाराज का भव्य और दिव्य
रजत जयंती महोत्सव

लेखन संकलन : डॉ. हर्षदभाई झिंझुवाडिया (अहमदाबाद)

सर्वावतारी परमब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से एवम् श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद आज्ञा से एवम् पूज्य बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज के शुभाशीष और अखंड सौ भाग्यवती लक्ष्मीस्वरुपा पूज्य गादीवालाश्री उसी प्रकार वात्सल्य मूर्ति पूज्य बड़े गादीवालाश्री के अंतर के आशीर्वाद के साथ प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा (अहमदाबाद) रजत जयंती महोत्सव से २०७५ माधसुद-३ ता. ८-२-२०१९ माधसुद-१० ता. १५-२-२०१९ तक पूर्ण हुआ।

इस महोत्सव के अन्तर्गत की धार्मिक कार्यक्रम किये गये। जिसमें श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण ज्ञान यज्ञ श्रीहरि महाविष्णुयज्ञ, श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन मंत्रजाप यज्ञ, ईष्टदेव श्री घनश्याम महाराज का दिव्य और भव्य पाटोत्सव श्रीहरिकृष्ण महाराज की सुवर्ण तुला विधिश्री वसंत रंगोत्सव, छप्पन भोग, अन्नकूट सर्वावातरी श्री स्वामिनारायण भगवान का महापुष्यभिषेक, प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कर कमलो द्वारा मंदिर में विराजमान संकल्पमूर्ति श्री घनश्याम महाराज का २५ वाँ रजत जयंती पाटोत्सव अभिषेक, मंदिर में विराजमान प्रत्येक देवताको प्रदिदिन अनेक फल मिठाई, सुखे मेवा, अन्नकूट के दर्शन, ब्राह्मण बटुक के यज्ञोपवीत सेवा यज्ञ इत्यादि किये गये । सामाजिक क्षेत्र में समूह लग्न, रक्तदान शिबिर, सर्वरोग निदान, दरिद्रनारायण को ब्रह्म भोज और प्रतिदिन सिविल अस्पताल में जनरल विभाग में १०० कि. से अधिक फल सेवा की जाती थी। निज मंदिर से ''श्री नरनारायणनगर'' तक दिव्य और दिव्य पोथीयात्रा और नगरयात्रा का सुंदर आयोजन, हिमालय दर्शन द्वारा श्री निरकंठवर्णी का सम्पूर्ण वन वीचरण दर्शन, प्रदर्शन द्वारा श्री स्वामिनारायण भगवान का सम्पूर्ण वनवीचरण दर्शन, प्रदर्शन द्वारा श्री स्वामिनारायण भगवान का सम्पूर्ण जीवन दर्शन, प्रत्येक दिन रात्रि सत्संग समाज के लिये संस्कार सत्संग और मनोरंजन कार्यक्रम ''सफाई वहाँ प्रभु'' विषय के उपर प्रेरणादायी जीवंत नाटक, भ्रूण हत्या के उपर भी संदेशात्मक नाटक, भाग्यवान प्रत्येक यजमान का यथोचित सन्मान, व्याखान माला द्वारा सम्प्रदाय का मूर्धन्य और बडे पूज्य संतो का सत्संग उद्बोधन, धार्मिक, राजकीय और सामायिक महानुभावो का उद्बोधन का आयोजन, महोत्सव में आये हुए। प्रत्येक पूजनीय संतो के लिये महाप्रसाद का अलग से आयोजन और प्रत्येक सत्संगी हरिभक्तो को प्रातः का नास्ता, दोपहर के बाद महाप्रसाद और रात्रि भोजन की सुंदर व्यवस्था थी।

इस महोत्सव में गुजरात के लोक प्रिय मुख्यमंत्री भाई श्री विजयभाई तथा उप मुख्य मंत्री श्री नितीनभाई पटेल भी उपस्थित रहे थे । इसके अलावा कई राजनायिक आये थे। गुजरात के अन्य धार्मिक स्थलो से संत-महंत आये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स.गु. महंत शास्त्री हरिओम स्वामी सात वर्ष से यहां के मंदिर में ठाकुरजी की सेवा महंत पद रहकर कर रहे है । ये विगत दो वर्षो से इस रजत जयंती महोत्सव को सम्पूर्ण सफल बनाने के लिये रात्रि-दिन अधिक श्रम किये है। सभी शिखरबंधमंदिरो में संतो और समर्पित सेवक हरिभक्तो के साथ जाकर १२-१२ घंटे श्री स्वामिनारायण भगवान की महामंत्र की अखंड धुन उसी प्रकार श्री नारणपुरा मंदिर के पास अपने

स्वामिनारायण म्युजियम में भी १२ घंटे श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन का आयोजन किये थे। इस के बाद नारणपुरा निज मंदिर से जेतलपुर मंदिर तक पदयात्रा का सुंदर भव्य आयोजन किये थे।

इस सम्पूर्ण महोत्सव के दरमियान अनेक प्रवृत्तियो में सर्व रोग निदान सेवा यज्ञ में औसत ५००० रोगियो को लाभ मिला। रक्तदान शिबिर में १०० बोतल रक्त, समूह लग्न में ३१ भाग्यवान नव दम्पति प्रसन्न दाम्यपत्य जीवन में प्रवेश किये। १२ ब्राह्मण बच्चो का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। इस महोत्सव में प्रतिदिन २० हजार सत्संगि हरिभक्त भोजन प्रसाद ग्रहण करते थे।

इस महोत्सव के अन्तर्गत अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम का सुंदर आयोजन किया गया। जिस में महिला मंच के दिन पूज्य अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री भी की पावन उपस्थिति के साथ साथ मध्यप्रदेश के महामहिन राज्यपालश्री आनंदीबेन पटेल भी उपस्थित रहे थे।

इस सम्पूर्ण महोत्सव में ५०० जितने ब्रह्मनिष्ठ पूज्य संत और औसत ३०० जितने पूज्य सांख्ययोगी माताये आई थी। अनेक विद्वान और बड़े संत पारायण के दिन सुंदर सत्संग उद्‌बोधन द्वारा सत्संगि हरिभक्तो का सत्संग संस्कार का सुंदर रस पान कराया। अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा पूज्य बड़े गादीवालाश्री आकर बहनो को दर्शन आशीर्वाद दिये। इस महोत्सव के अध्यक्ष परम पूज्य १०८ लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री समारम्भ में दीप प्रागट्य द्वारा सभा का मंगल प्रारम्भ किया गया। सभीने अलौकिक दर्शन का लाभ लिये। मंदिर २५ वे रजत जयंती पाटोत्सव अभिषेक अवसर पर प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री मंदिर में विराजमान संकल्प मूर्ति श्री घनश्याम महाराज को वेदोक्त विधिसे षोडशोपचार सहित महाअभिषेक स्वयं के हाथो द्वारा सुंदर लाभ दिये। ''श्री नरनारायण नगर'' में आकर महोत्सव की पूर्णाहुति किये। सभी को दिव्य दर्शन देकर आशीर्वाद प्रदान किये।

नारणपुरा मंदिर में बिराजमान संकल्प मूर्ति सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज तथा समग्र धर्मकुल के सम्पूर्ण कृपा से और बड़े पूजनीय संत और सांख्ययोगी माताओ के आशीर्वाद के फलस्वरुप इस महामहोत्सव सर्वोपरी और सभी प्रकार से सफल यादगार बन गयी। नारणपुरा मंदिर के पू. महंत शास्त्री स्वामी हरिॐप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर श्रीमद् सत्संगीजीवन कथा अलौकिक किये थे। हजारो भक्तोने कथा सुनकर धन्य हुए।

हमारे श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान द्वारा मनाये जाने वाले सभी उत्सवो में सर्वोपरी मनाया गया। नारणपुरा मंदिर का रजत जयंती महोत्सव भी सर्वोपरी था।

इस रजत जयंती पाटोत्सव महोत्सव में तन, मन, धन से सेवा किये। उसी प्रकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप में (टी.वी. में देखो) इस महोत्सव का दर्शन और कथा वार्ता श्रवण करके सत्संगी हरिभक्तो को यह महोत्सव आजीवन स्मरण रहेगा। जीव आत्मा का परम कल्याण हो। सभी का मनोरथ पूर्ण हो। ऐसे सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान उसी प्रकार श्रीहरि के परम पवित्र समस्त धर्मकुल परिवार के श्री चरणो में करवद प्रार्थना के साथ सभी को श्रीहरि स्मृति सह सप्रेम जयश्री स्वामिनारायण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में अपने शहीद सैनिको के लिये श्रध्धांजलि

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री की आज्ञा से ता. १६-२-२०१९ के दिन परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प्रसादी सभा मंडप में प्रातः ७-३० से ८-१५ तक कश्मीर के पुलवामा में हमारे देश के ४४ जितने वीर आतंकवादी हमला में शहीद हुए। ऐसे परमवीरो को संत-हरिभक्तो द्वारा श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन करके श्रध्धांजलि प्रदान की गयी।

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, નારણપુરા

રજત જયંતી મહોત્સવ

દીપ પ્રાગટ્ય

ઉદ્‌ઘાટન

રાજકીય મહાનુભાવો
ધાર્મિક મહાનુભાવો
પ્રદર્શન
પોથીયાત્રા
કથા શ્રવણ
સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ

ઉદ્‌ઘાટન

આશીર્વચન

અખંડ ધૂન

વિષ્ણુયાગ સભા

શાકોત્સવ

યજ્ઞશાળા દિપ પ્રાગટ્ય

યજ્ઞશાળા

સમૂહ યજ્ઞોપવિત

સમૂહ મહાપૂજા

પ્રતિદિન ધ્વજ વંદન

સમૂહ લગ્ન

શોભાયાત્રા
બ્લડ ડોનેશન કેમ્પ
મેડિકલ કેમ્પ
મહાપ્રસાદ
લેસર શો - રોશની

कुमकुम का चाँदला

- गंगारामभाई एम. पटेल (प्रांतिज)

स्त्री का सौभाग्य चाँदला और् चुडी है । वैसे ही सत्संगी की सौभाग्य तिलक-चांदला होता है । तिलक-चांदला लक्ष्मीजी और नारायण का संयुक्त प्रतीक है । उद्र्वपुड्रं तिलक यह परमात्मा के चरण का प्रतीक है । और चाँदला लक्ष्मीजी का प्रतीक है । कई सम्प्रदाय में मात्र तिलक ही लगाते है । कई सम्प्रदाय में मात्र चाँदला ही किया जाता है । अपने स्वामिनारायण संप्रदाय में स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में आज्ञा किये है कि सत्संगि पुरुष मात्र को चाँदला सहित उर्ध्वपुंड्र तिलक करना और सुवासिनी स्त्रियो के लिये अपने कपाल पर कुमकुम का चाँदला करना बताये है । तिलक और चाँदला सत्संगी की पहचान है ।

कंकु का चाँदला मस्तक पर धारण करने वाली स्त्री पर राधालक्ष्मी अति प्रसिन्न रहती है । तिलक और् चाँदला देखकर राधा-लक्ष्मी अपना घर मानकर सदैव निवास करती है । और घर में धन, सम्पत्ति आती है । इस लिये प्रातः स्नान के बाद तिलक और चाँदला करना चाहिए ।

श्री कृष्ण भगवानने सुदामा को तिलक-चाँदला किये तो उनके घर अकूत सम्पत्ति आ गयी ।

अम्बरीष राजा भगवान के मंदिर को स्वयं साफ करते थे । गाय के गोबर से लीपते थे । प्रत्येक सुबह गंगा स्नान करने जाते थे । तथा गंगा के किनारे वाली मिट्टी से तिलक भी करते थे ।

एक दिन सुबर के समय एक वृद्ध महिला गोबर से भरे पात्र को लेकर बैठी थी । कोई आये तो उससे उठाने के लिये कहे । ताकि सिर पर रख सके । वहाँ पर अम्बरीष राजा गंगा स्नान करके आ रहे थे । धोती और् कपाल पर तिलक देखकर माताजी कम प्रकाश में पहचान नही सकी । उन्होने समझा कोई ''भगतजी'' आ रहे है । और बोली ''भगतजी यह पात्र उठा दे ? अम्बरीष राजा खुश खुश हो गये । मेरा तिलक-चांदला देखकर माताजी ने मुझे ''भगत'' कह कर बुलाया । राजा पात्र को उठाये और माता का पता पूछ लिये । स्नान-ध्यान पूजा करके राजा राजगृह में आकर बैठ गये । तथा वृद माँ को राजकार्यालय में बुलाये और माता का सन्मान करके पाँच गाँव पुरस्कार मे दे दिये ।

माताजी को मात्र राजा अम्बरीष को भगत कहके सम्भो चित की थी । राजा खुश होकर पाँच गाँव पुरस्कार मे दे दिये । यदि भगवान के भक्त में इतनी शक्ति है तो अनंत कोटि ब्रह्माडं के अधिपति पुरुषोत्तम नारायण अपने 'भक्त' को अनंत गुना फल देकर सुखी करे उसमें क्या तकलीफ है ?

इस लिये भगवान के भक्त को परमात्मा के प्रसन्नात का प्रतीक तिलक-चाँदला कपाल में अवश्य लगाना चाहिए । सत्संगी की पहचान तिलक और चाँदला है । चांदला बिना का व्यक्ति पता विहीन पत्र है । इसलिये नौकरी जाते समय विद्यालय जाते समय चाँदला करके जाये शरमाये नही । तिलक और चांदला किसी भी कार्य में विजय और सफलता प्रदान करता है।

-: रास गरबी :-

रुडी पूनम पवित्र रणीयामणी रे, आज राखो दर्शन नुं नेम
एम नरनारायण बोलिया रे..... टेक
सुख सम्पति दणी तेणे पामशो रे,
धणुं रहेशे कुशल ने क्षेम.... अेम
खान पान धन धाम घणुं पामशो रे,
थाशे रिधि-सिध्धिनो जोग.... अेम
वली प्रीति थाशे परिब्रह्मां रे,
जाशे जन्म-मरण महारोग.... अेम
वळी मारा पूनमिया पामशे रे,
रुडां ज्ञान भक्ति ने वैराग्य.... अेम
वणी सेवी ने साचा संतने रे,
थाशे भक्त मोटा बडभाग.... अेम
धाम अक्षर तुल्य अहमदाबाद छे रे,
आज आयी अधिक नहि धाम.... अेम
पोते पूर्णानंद नो नाथजी रे,
स्वामी सहजानंद जेनुं नाम.... अेम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

हमारे प्रत्येक मंदिर में ठाकुरजी के सिंहासन पर गरुडजी की मूर्ति प्रस्थापित करने की परम्परा सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर से सम्प्रदाय में चली आ रही है। गरुड भगवान विष्णु का वाहन है। गति और शक्ति का प्रतीक है। मंदिर में दर्शन करते समय सिंहासन के अगले भाग में प्रस्थापित गरुडजी का सभी लोग दर्शन करते है। इससे जीवन में सत्संगि मनुष्य को गति और शक्ति प्रदान करता है। मूली में भी अपने मंदिर में श्री राधाकृष्ण के सिंहासन पर गुरुडजी की स्थापना उस समय अर्थात् श्री राधाकृष्णदेव की प्रतिष्ठा के साथ की गई थी । इस लिये ये गरुडजी श्रीजी समकालीन प्रसादी है। म्युजियम के होल नं. ४ में वर्तमान समय में रखा गया है।

इसके उपरांत हमारे म्युजियम में प.पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प से यज्ञशाला बनाया गया है। जिस में प्रति रविवार श्री महाविष्णुयाग यज्ञ किया जाता है। जिस यज्ञ में बैठने का लाभ हरिभक्तो को मिला है। शायं यज्ञ की पूर्णाहुति प.पू. बड़े महाराजश्री के कर कमलो द्वार किया गया। जिसका लाभ कई हरिभक्त लिये। और लेते रहते है। आप भी इस यज्ञ में बैठने लाभ लेने की ईच्छा रखते हो तो श्री स्वामिनारायण म्युजियम की आफिस में सम्पर्क करे।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि फरवरी-२०१९

दि. ०३-०२-२०१९ श्री पारुलबेन मनीषभाई पटेल - राणीप

दि. २६-०२-२०१९ श्री लक्ष्मीबेन निरवभाई पटेल - लंडन

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-फरवरी-२०१९

रु. ११,०००/-	सी.ए. ऋत्विज राजेन्द्रकुमार - विवाह अवसर
रु. १०,०००/-	हरसुता चंद्रकांतभाई भट्ट - वेजलपुर
रु. ९,०००/-	टेम्पावाल हरिभक्त समस्त - अदमदाबाद
रु. ९,०००/-	युवक मंडल सम्राट टेम्पावाला - अहमदाबाद
रु. ९,०००/-	बाल मंडल समस्त टेम्पावाला - अहमदाबाद
रु. ९,०००/-	महिला मंडल समस्त - अहमदाबाद
रु. ९,०००/-	टेम्पावाल समस्त हरिभक्त - अहमदाबाद
रु. ९,०००/-	चेम्पावाला युवक मंडल - अहमदाबाद
रु. ९,०००/-	हरिभक्त समस्त टेम्पावाला - अहमदाबाद
रु. ९,०००/-	युवक मंडल समस्त टेम्पावाला - अहमदाबाद
रु. ५,५००/-	कुंदनबेन तथा विमलाबेन - कपडवंज
रु. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोषी - बोपल
रु. ५,०००/-	डॉ. कान्तिभाई पटेल - न्युजीलैण्ड
रु. ५,०००/-	अ.नि. आनंदीबेन वासुदेवभाई काछिया - बालासिनोर

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सत्संग आख्यायिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सहजानंदीसिंह

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

गोलीडा गांव की यह एक सुंदर बात है । हम सब यात्रा करने जाते है । प्राय: बड़े शहर में जाते है । लेकिन छोटे-छोटे गाँवो के तीर्थ स्थान पर नही जाते है । लगभग हम भूल जाते है ।

बात यह है कि गोलीडा गाँव में चार भाई थे । चारो युवक थे । जाति से राजगोर ब्राह्मण, पक्के सत्संगी, स्वामिनारायण भगवान की भजन करते थे । सत्संगी ऐसे प्रामाणिक थे कि बात ही मत पूछो । चारो खेती करते थे हृदय में स्वामिनारायण भगवान के प्रति निष्ठा थी । साँस-साँस में भगवान के नाम का सुगंधथी । और बलवान भी थे ।

एक दिन चारो भाई खेत से घर आ रहे थे । शायं का समय था । उन्होने अपने आँख से एक घटना देखे गाँव के किनारे दो यमदूत दिखाई दिये । ये दोनो यमदूत एक पापी जीवन को यमपुरी ले जाते रहे थे। चारो भाई सोचने लगे यह क्या है ? ये तो यमदूत है और हमारे गाँव में ? इस गाँव में हम सत्संगी है और अपने गाँव से कोई जीव क्यो यमपुरी मे जाये !

देखे अब कैसी अनोखी लडाई होने वाली है । और जीत कैसे मिले ! हम इस गाँव के है । हम लोग स्वामिनारायण भगवान के भक्त है और हमारे गाँव से कोई जीव कैसा भी क्यो न हो वह यमपुरी में क्यो जाये । कारण हम सभी स्वामिनारायण नाम का शब्द सम्पूर्ण गाँव सुनता है ।

चारो भाई प्रात: उठकर, नदी में नहाने जाये तो तब स्वामिनारायण..... स्वामिनारायण..... धुन बोलते बोलते जाते थे । पूरे गाँवि में खबर थी कि ये सभी स्वामिनारायण भगवान के सच्चे भक्त है । उन्हे दूसरा रंग चढे ऐसा भी नही था । चारो भाई विचार किये कि इस जीव को इसके हाथ में नही जाने देना है ।

जिनके हृदय में स्वामिनारायण भगवान बैठे हो उसके हृदय में पूरी ताकात होती है । चारो भाईयो का नाम ''भीम, राघव, वशराम, राणो चारो प्रभु के भक्त'' चारो भाई तेजी से आवाज लगाये जैसे कोई चोर को ललकार रहा हो कि जीव को यदी छोड दो । दोनो यमदूत खडे हो गये और बोलने लगा ये कौन है । छिलके जैसा । तुम्हे क्या काम है ? इस जीव को यहाँ रख दे । यह भाई जीवित पापी है और हम लोग पापी को यमपुरी ले जाते रहै है । यह पापी हो या पुण्यशाळी हम बोलते है इसी यही पर छोड दे । तब एक यमदूत बोलता है – आप कानून का उल्लंधन कर रहे है । आप सत्संगी है और चाँदला किये है इस लिये आप को धर्मराज के कार्य में रुकावट करने का अधिकार नही है । देखो भाई ! कानून की बात मत कर । हम किसान है और स्वामिनारायण के भक्त है । हम कह रहे जीव को यही पर छोड दे । हम जो बोले वही नियम है । यम बोलते है – युक्त की उपाधी, ये तो बोलता रहेगा । इससे क्या होगा । बड़े सत्संगी है तो अपना घर सम्भाले । जब तुम्हारे घर पर आयेगे तो बात करना । ये तो पापी जीव है हम इसी ले जा रहे है ।

इन चारो में भीम बहुत चंचल थे । इस प्रकार यह यम नही मानेगा । इसके पास बल और हाथ में मोटी लकडी थी । एक बार लकडी उठाकर फटाक से मुँह पर मार दिया । यमदूत का दाँत जो दस इंच लम्बा था । उस प्रहार से दाँत टूट गया । जैसे कोई पत्थर टूटा हो । निष्कुलानंद स्वामी भी अपने कलम से चरित्र लिखे है ।

"त्यारे भीम राणो भडकारी, कृतांत दांतमां डांग मारी
थयो कडाको वसमी बीति, जम भक्तने न शक्या जीती"

यमदूत को ऐसा लगा ये अलग किस्म का व्यक्ति है । हम तो यह मान रहे थे कि छिलका है । लेकिन ये आँख का किरकिरी है । क्या करे ? छोडो पंचायत एक जीव नही तो दूसरा क्या ? जमपुरी पूरी भरी है । जीव को छोडकर यमदूत भाग जाता है । ये चारो भाई विचार करते है । अब इस जीव का क्या किया जाये । इसकी उम्र पूरी हो गई है, देह छोड़ कर आ गया है । अब इसका क्या करना ? तब बडा भाई बोलता है । ''स्वामिनारायण भगवान के नाम से उनके प्रताप से उनके ऐश्वर्य से है जीव ! तुम बद्रिकाश्रम में जाओ और वहाँ पर तप करो'' और जीव चला गया । कैसा सत्संग होगा, कितनी

ताकत होगी। पापी जीव का यम के हाथ से छुडा लिया।

"जेने बल बहुनामी तणुं, मान्युं पोताने सेवक पणुं तेथी जाणो कौण न जीताय, आ लोक परलोक में मांय"

इसका ही नाम सहजानंदी सिंह है। कई बार कुत्तो भौकते है लेकिन जब खतरा आता है तो पूँछ छिपाकर भाग जाते है। पूंछ छिपाकर भागे वह शेर नही है। विपत्ति में जो साथ दे वह सच्चा सहजानंदी शेर है।

मित्रो ! याद रखे हम लोग भी स्वामिनारायण भगवान के भक्त है तो भगवान का भजन, भक्ति, सत्संग का बल रखेगे तो हमारे में भी शक्ति आयेगी। और कोई भी मंत्र तंत्र, भूत, प्रेत से डर नही लगेगा। स्वामिनारायण भगवान आप की सदैव रक्षा करेगे।

●

खीर का अनोखा स्वाद

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

कईबार ऐसी घटना होती है कि उसमें त्वरित बुद्धि का उपयोग करने से काम पूर्ण हो जाता है। जब एक से अधिक त्वरित बुद्धि वाला व्यक्ति अपने बुद्धि के बल से लाभ ले लेता है। मित्रो ! आप ऐसी बात पढेगे। यदि ध्यान से पढेगे तो समझ में आ जायेगा। यह बात तीन मित्रो की है। ये तीनो मित्र ऐसे-वैसे नही थे। बल्कि बचपन से साथ पढ़े, खेले, और साथ घुमने वाले ते। ये तीनो मित्र बड़े हो गये। साथ काम करते थे। खूब मिलजुलकर रहते थे। लोग तीनो की मित्रता देखकर खुश हो जाते थे।

ये तीनो लोग एकबार यात्रा करने का विचार बनाये। अच्छे विचार का क्रिया -वचन भी कर दिये। तीनो मित्र यात्रा के लिये निकल गये। उस समय आज की तरह वाहन व्यवहार की सुविधा कहाँ थी। चलते-चलते बात करते-करते रास्ते पर सांझ हो जाती थी। रात हो जाने पर किसी गाँव में रुकने की योजना बनाये। पूछ-परख करने पर एकधर्मशाला में रहने की व्यवस्था हो गयी। पूरे दिन चलने के कारण भूख तीव्र लगी थी। तीनो शुद्ध धार्मिक थे इस लिये भोजन होटल या लोज में करते नही थे। भूख तेजी से लगी थी। क्या करे ?

लोग विचार किये, कि कुछ न करके खीर बना ले, और पीकर सो जायेगे। बाजार से दूधचावल, चीनी लेकर अच्छी खीर बनाये। भगवान का भोग लगाकर तीनो लोग खीर पी गये। एक एक तसला खीर पी गये। अभी एक तसले जैसी खीर बच गयी थी। ये बढी हुई खीर कौन पीये ? सच्चे मित्रो के बीच झगडा हो ये अच्छी बात नही। तीनो ने विचार किया। खीर को ढककर रख देते है। और सो जाते है। प्रातः उठकर अपने स्वप्न की बात करेगे। जिसका स्वप्न अच्छा होगा, वह यह खीर पीयेगा। यह सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया।

पूरे दिन चले थे। इस कारण से थकान अधिक लग गई थी। दो लोग तो तुरंत सो गये। तीसरा मित्र थोडा विनोदी था। वह उठा और ढकी खीर ले कर खडे-खडे पी गया। बाद में वह भी सो गया। प्रातः क्या उत्तर मित्रो को देना होगा। वह सोये-सोये तरीका ढूँढ लिया और सो गया। कारण वह विनोदी और त्वरित बुद्धिवाला व्यक्ति था। प्रातः तीनो मित्र उठे। स्नान करके पूजा पाठ किये। फिर बैठ कर अपने सपनो की बात करने लगे।

पहला मित्र प्रारम्भ किया ! मित्रो ! क्या बात करु। मैं रात्रि में सपने में स्वर्ग में गया था। वहाँ पर प्रकाश मय वातावरण था। सोने के सिंहासन पर भगवान का दर्शन करके धन्य-धन्य हो गया। अहा कैसा सुन्दर स्वर्गधाम। कैसा शोभायमान और सुंदर.... वहाँ पर मुझे रुकने का मन कह रहा था। लेकिन क्या। में थोडीदेर में जग (उठ) गया।

दूसरा मित्र सपने की बात प्रारम्भ किया। मैं रात में कैलास में गया था। महादेव का दर्शन हुआ। कैलास की कैसी शोभा। भोलेनाथ और पार्वतीजी का दर्शन ठंडे मौसम में और महादेव के सिर पर गंगाजी बह रही थी। क्या सुंदर वातावरण था ..... मैं तो गंगा के प्रवाह में स्नान करने लगा। लेकिन ठंड के कारण एकदम जग गया।

ये दोनो मित्र अपने स्वप्न की बात करके तीसरे मित्र से पूछने लगे। हमने तो अपने स्वप्न की बात कर दी। अब तुम अपनी बात करो। तब तीसरा बात करने लगा। आप दोनो का स्वरुप बहुत अच्छा था। खीर तो आप लोगो को मिलना चाहिए। मुझे तो अपने सपने की बात करने में डर लग रहा है। दोनो मित्र अन्दर से खुश होकर तीसरे मित्र की बात सुने लगे। तीसरा मित्र बात करने लगा। रात्रि में हमारे सपने में हनुमानजी आये थे। बड़ी शरीर हाथ में गदा, डरावनी बड़ी आँखे, लम्बी पूंछ, यह देखकर मैं कापने लगा। मैं हनुमानजी से पूछा कि मेरा क्या दोष है। दादा। कि आप गुस्से में है। हनुमानजीने गदे से मुझे धक्का दिये और बोले सीधे सीधे खडे

(पेईज नं. २५)

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "भगवान कृपासाध्य है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

मोक्ष कब प्राप्त होता है ? भगवान की कृपा होती है तब ! तो भगवान की कृपा कब मिलती है । शतप्रतिशत शरणागति स्वीकार करने पर और भगवान की महिमा' समझने से होती है । हमलोग कई बार पढते है, सुनते है कि भगवान कर्ता-हर्ता है । और कर्म फल प्रदाता है । भगवान की महानता अधिक है । उनके कृपा से सब कुछ होता है । सम्पूर्ण जगत में जो चाहे वही ही होता है । अच्छा या खराब हुआ हम लोग तत्काल की अवस्था से निर्धारण करते है । मान ले भगवान ने निश्चित कर लिया इस स्थान पर इतनी वर्षा करना है । तो उतनी ही मात्रा में वर्षा होती है । वहाँ जिसका खेत है उसके लिये अच्छा है । वह कहेगा अच्छी वर्षा हुई है । उदाहरण स्वरुप किसी ने रंग-रोशन करवाया हो तो उससे पूछने पर पता चलेगा कि अच्छा कार्य नही हुआ । वर्षा का होना तो निश्चित था । अच्छा और खराब मनुष्य निश्चित करता है । यह मनुष्य का प्रारब्धहै । भगवान के लिये ऐसा नही की कृषक के प्रति अधिक प्रेम एवम् कलर वाले के प्रति वैर भाव था । ग.म २१ वे वचनामृत में महाराजजी कहे है कि ''मूर्ख व्यक्ति एक बात को समझ लेता है तो वही मुख्य बात मान लेता है, काल को मानले काल, कर्म को मुख्य माने तो कर्म, और माया हो तो माया मान ले लेकिन जहाँ पर जिसकी प्रधानता होती है वह नही समझ पाता है . लेकिन ज्ञानी व्यक्ति जो प्रधान पद हो उसी को अग्रिम पंक्ति में समझता है । और परमेश्वर तो देश, काल, कर्म, माया सभी के प्रेरक है । अपनी इच्छानुसार मुख्यता रखते है । जैसे प्रजा राजा के सभी आदेशो का अनुपालन करती है । राज्य में मंत्री और दीवान होते है राजा जो कहते है वही किया जाता है । यदि मना कर दिया तो लेश मात्र भी कार्य नही किया जाता है । उसी प्रकार देश, काल, कर्म, माया का जितना परमेश्वर आदेश देते है उतना ही करते है । परमेश्वर के आदेश के अतिरिक्त एक कणभी आगे नही बढ सकते है । इस लिये सर्वकर्ता परमेश्वर ही है । और कर्म फलदाता भी परमेश्वर है । कुछ अच्छे कार्य स्वर्ग में ले जाते है । तथा कुछ कार्य नर्क की तरफ ले जाते है । कर्म के बाद जो मिलता है । वह अपने हाथ में नही है । इस लौकिक जगत में यदि अपने से कोई गलत कार्य हो जाता है तो न्यायालय में न्यायाधीश दण्ड निश्चित करते है । हम स्वयं दण्ड नही निश्चित कर सकते है । अपने खराब कर्मो की सजा जीवन में मिलती है उसकी सजा क्या है ? कितने मात्रा में है ? तब मिलेगी ? कितने समय के लिये मिलेगी ? यह महाराज निर्धारित करते है । हम कितना भी अच्छा कार्य जीवन में करे । खराब कर्मो का दण्ड तो मिलता ही है । इस लिये सोच समझ कर कर्म करना चाहिए ।

हम कोई भी कार्य करते है तो उसकी जड में क्या होगा, क्या फल मिलेगा । तो मोक्ष प्राप्ति हेतु जब हम प्रयास करते है तब अच्छे संकल्प आ जाते है । क्योकि स्वयं प्रयास करते है कि ''मोक्ष'' प्राप्त हो । वहाँ के ऐश्वर्य और वैभव का सहज ज्ञान हो जाता है । इसको करने में अपने मे से भूल भी हो जाती है । उदाहरण स्वरुप हम कई अवतारो को अळग मान लेते है । सुनने में भूल हो जाती है । किसी अवतार की दुश्मनी हो जाये ऐसा नही होना चाहिए । ब्रह्मांड की रचना कैसे हुई ये सारे संकल्प है । ये भी भूल है । क्योकि ? यहीं ''जिज्ञासा'' अपेक्षा पूरा करने के लिये फिर आना पडता है । ये सब दूर हो इसके लिये क्या करना चाहिए ? इस लिये भगवान की सच्ची ''महिमा'' समझने से ये अवरोधदूर हो जाते है । जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिल जाती है । तो अपना मुख्य दो संकल्प होना चाहिए । पहला जन्म-मृत्यु के चक्र से 'मुक्ति' और भगवान के चरणो में बैठकर भगवान का दर्शन करना । 'मोक्ष' विना भगवत कृपा से नही प्राप्त होगा । मोक्ष साधनो से नही मिलता है । साधन हमें ''मोक्षमार्ग'' के तरफ अग्रसर करता है । मानले आप आत्म निष्ठ हो गये । काम, क्रोध, मद, लोभ और माया पर विजय प्राप्त कर लिये । ये सब प्रयत्नो के बाद भगवान आप के उपर कितना खुस होगे यह ज्ञात नही होता है । मोक्ष मात्र प्रभु की कृपा से ही मिलता है । यह केवल प्रभु की शत प्रतिशत शरणागति स्वीकार करने से मिलती है । तथा कभी प्रभु से माया वाली वस्तु नही माँगे । आप से अधिक प्रभु को आप की आवश्यकता का ज्ञान है । क्या करने से अपना आध्यात्मिक विकास होगा । इसकी हमेशा माँग करे

। आप को जो योग्य लगे वह मेरे जीवन में करें । ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए ।

हमें कोई रोग हो जाता है । तब हम डॉक्टर के पास जाकर रोग की मुक्ति की माँग करते है । तो ऐसे राहत नही मिलती है । उसके लिये नियमित कडवी दवा खानी पडती है । और आदेशानुसार परहेज भी करना पड़ता है । उसी प्रकार हम भी इस जन्म-मरण के भवरोग की मुक्ति हेतु भगवान की शरणागति स्वीकार करके भगवान द्वारा बनाये गये नियम रुपी दवा का पान करके तथा भगवान रुपी आज्ञा का पालन करके 'मोक्ष' प्राप्ति को तरफ अग्रसर हो कर कृपा पात्र बन सकते है ।

●

कथा किसके लिये ?

- लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, ता. कडी)

भक्ति मार्ग में प्रवेश करने वाले व्यक्ति के लिये कथा, सत्संग, जप, ध्यान इत्यादि सहायक पक्ष है । संत सत्संग द्वारा कथा द्वारा मानव जाति की शांति और स्थिरता प्रदान करने के लिये प्रभु भक्ति करते है । किस शब्द को उल्टा करे तो थाक शब्द बनता है । मन की थकान दूर करे, मनोव्यथा को हर ले वह कथा है । मानव जाति की व्यथा हरे वह हरिकथा है । कुछ लोग नाम कमाने के लिये आडम्बर करके कथा करते है । लोगो को सुधारने की जगह अपना प्रभाव बढाना होता है । उनकी वाणी विद्वता युक्त होने के बाद भी लोगो को हृदय को नही स्पर्श करता है । इस कथा से किसी के जीवन में बदलाव नही आता है ।

कई लोग समाज में अपनी वाह-वाही के लिये अपने को धार्मिक कहते है । नाम के लिये स्वामिनारायण भगवान की कथा कराते है । लेकिन ऐसे कथाकार तथा कथा कराने वाले सुनने वाले कोई लाभ नही मिलता है । प्रत्येक कर्म को निष्ठा से पूरा करे । कथा में भी गुरुकृपा तथा भगवद् निष्ठा आवश्यक है । वक्ता और श्रोता दोनो प्रभु प्रेम मे मग्न हो मस्त हो तो ऐसी कर्ता जीवन में अवश्य बदलाव लाती है । जिस प्रकार दलान में स्थित दिया दोनो भाग में प्रकाश फैलाता है । उसी प्रकार हृदय से कथा वाचन और श्रवण किया जाय तो सच्ची कथा है । मेरा सभी हरिभक्तो से आग्रह है कि आप श्रद्धा पूर्वक कथा सुने, वचनामृत सुने, इसे आचरण में लाने का प्रयास करे । धर्म का छोटा आचरण भय से मुक्त करता है ।

सद्गुरु श्री मुक्तानंद स्वामी कीर्तन में कहते है कि

कथा ने कीर्तन कहेता फरे छे, कर्मत्तणीजे कहाणी रे, श्रोताने वक्ता बेउ समझया विनाना, पेटने अर्थे पुराणी रे.....

इस प्रकार कथा में ''पोथीमांना रीगणा'' हो तो क्या अर्थ निकले ? कथा जो व्यवसाय हो तो 'पेट' भर सकते है । जीवन का कल्याण नही होगा ? श्रीजीमहाराज कहते है कि ''जैसे शास्त्र में भगवान के अवतार और उनके साकार रुप का प्रतिपादन हो वैसा ही शास्त्र की कथा होनी चाहिए । सम्प्रदाय के शास्त्रो से सत्संग की पुष्टि होती है । वह शिक्षापत्री के २०३ श्लोक में मिलता है ।

साम्प्रदायिक ग्रंन्थेभ्यो ज्ञेय एषां तु विस्तर: ॥

धर्म का विस्तार ही हमारे सम्प्रदाय के जो ग्रन्थ है उनसे ज्ञान प्राप्त करें ।

अनु. पेईज नं. २३ से आगे

हो जाओ जैसा मैं कहू वैसा ही करो । मैं तो उठ गया । आगे मैं और पीछे हनुमानजी । मुझे धक्का मारते-मारते खीर के पास लाये और बोले ? ये बची हुई खीर को पी जाओ । तब मैं बोला दादा । ये तो वही पीयेगा जो अच्छा सपना कहेगा । मुझसे यह नही होगा । तब तक दादाने गदा उठा लिया और कहे पी जाओ नही तो गदे से मारेगे आखिर में मैं क्या करता ? बाद में काँपते-काँपते मैं खीर पी गया ।

दोनो मित्र का मुँह गिर गया और बोलने लगे कि हे मित्र जब यह हो रहा था तो हम लोगो को बुलाना चाहिए था । तब वह विनोदी मित्र बोला कि मैने काफी आवाज लगाई आप लोग सुनते तो मुझे लगा आप नही सुन रहे है । अब पता चला कि एक स्वर्ग में तथा एक कैलास में थे तो मेरी आवाज कौन सुनता । इस विनोदी मित्र की बात सुनकर दोनो मित्र हँस पडे । सच्चे मित्रे थे । उनका मन दुखी नही हुआ । लोग खुश हो गये । इस दोस्त की बुद्धि और विनोद प्रिय स्वभाव से दोनो खुश हुए ।

मित्रो ! देखा विनोद प्रिय और कुशाग्रबुद्धि वाले व्यक्ति को लाभ मिलता है । आप लोग आप से में इसी तरह की मित्रता रखकर ईष्टदेव स्वामिनारायण भगवान पर दृढ निष्ठा रखकर भक्त बने रहिए । आफ के जीवन में भी सम्प्रदाय के नियम का दृढता से पालन करने की निष्ठा आये तथा प्रभु के चरणो में लगाव दृढ हो ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर वसंत पंचमी शिक्षापत्री का पूजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में माघ सुद-५ वसंत पंचमी को शिक्षापत्री के शुभ जयंती पर प्रसादी सभा मंडप में संत-हरिभक्तोने श्रीमद् शिक्षापत्री का वेदोक्त विधिसे पूजा-अर्चना किये । प.भ. जादवजीभाई रामजीभाई पटेल (धरमपुरवाला) पूजन में यजमान बनकर लाभ लिये थे । समग्र शिक्षापत्री का वाचन स.गु. शा. स्वामी छपैयाप्रसाददासजीने किया था । सम्पूर्ण आयोजन कोठारी जे. के. स्वामी, भंडारी जे. पी. स्वामी और संत मंडल सुंदर रुप से किये थे ।(शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी - कोटा महंतश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा पाटोत्सव शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल की खुशी से तथा पू. स.गु. महंत शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) के सुंदर मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा ठाकुरजी का ११ वाँ पाटोत्सव और शाकोत्सव (माणसा) ता. १२-२-१९ के दिन भीमपुरा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल एवम् समस्त सत्संग समाज के तरफ से उत्साहपूर्वक मनाया गया ।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी पू. शास्त्री राम स्वामी (कोटेश्वर) आदितीर्थो से संत आये थे और श्रीहरि की महिमा को बताये थे । संतो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक-अन्नकूट और शाकोत्सव विधिवत रुप से पूर्ण किया गया । सभा का संचालन स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी सुंदर रुप से किये थे । गाँव के सभी हरिभक्त तन, मन और धन से सेवा किये थे । (कोठारीश्री, भीमपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी का प्रथम पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा यहाँ के प.भ. दासभाई, ट्रस्टी आदि हरिभक्त और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सभी के आयोजन से ता. २२-२-१९ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी का प्रथम पाटोत्सव उस्तव पूरव्क मनाया गया ।

पाटोत्व के उपलक्ष्य में सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान कथाकार पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी के वक्ता पद से श्रीमद् ग्रंथराज वासुदेव महात्म की पंचान्ह पारायण का सुंदर आयोजन प.भ. डॉ. कनुभाई एच. पटेल के यजमान पद से पूर्ण हुआ । पोथीयात्रा में अपने जवानो को जो पुलवामा में शहीद हुए है । नत मस्तक होकर श्रद्धांजलि प्रदान की गयी थी । शहीदो की आत्मा की शांति हेतु ढाई घंटे तक भजन-कीर्तन किया गया था । और उनके परिवार के लिये रु।. ५०,०००/- का फंड इकट्ठा करके कालुपुर मंदिर के पू. महंत को देकर महापूजा की आरती और पूर्णाहुति की गयी थी । अन्य कार्यक्रमो में विष्णुयज्ञ, समूह महापूजा, अन्नकूट और शाकोत्सव मनाया गया था ।

इस अवसर पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप बड़े गादीवालाश्री आये थे । कथा श्रवण करके बहनो के मंदिर में अन्नकूट आरती की थी । तथा बहनो को आशीर्वाद प्रदान किये ।

प.पू. लालजी महाराजश्री संत मंडल के साथ आये थे । और ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारे थे । कथा-महापूजा की पूर्णाहुति की आरती करके मुख्य यजमान का सन्मान करके सभा में सबको आशिर्वाद दिये थे । इस अवसर पर तीर्थो से संत आये थे ।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाईयो का) झूंडाल में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्रीहरि समकालीन नंद संतो में स.गु. महानुभावानंद स्वामीने दस गाँव लेऊआ पाटीदार गोल की रचना किये तथा परम्परा गत सत्संग होता रहे । इस शुभ हेतु से गोल में पारिवारिक लेन-देन की शुरुआत कराये थे । स्वामी के आशीर्वाद से लगभग १०० वर्ष पहले संतो ने गाँव में मंदिर बनाये थे । यह मंदिर जीर्ण होने के कारण ईष्टदेव श्रीहरि की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से और स्वामी शिष्य परम्परा में अहमदाबाद मंदिर के स.गु. स्वामी राजेन्द्रप्रसादजी के गुरु अ.नि. स्वा. स्वयंप्रकाशदासजी के शुभ प्रेरणा मार्गदर्शन से उसी प्रकार स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमचरणदासजी और कोठारी स.गु. स्वा. कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से शिलान्यास के यजमान प.भ. बाबुभाई ईश्वरभाई पटेल तता गाँव के समस्त सत्संग समाज ने तन, मन और धन के साथ सहकार दिये थे । और भव्य गगनचुंबी मंदिर का निर्माण एवम् ता. १४-२-१९ से २०-२-१९ तक भव्य से भी भव्य मूर्ति प्रतिष्ठा का महोत्सव मनाया गया था । महोत्सव के उपलक्ष्य में स.गु. शा. श्रीजी स्वामी (हाथीजण) के वक्ता पद से मधुर संगीत के साथ श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रन्थ की सप्ताह पारायण का खूब विशाल सभा मंडप में आयोजन किया गया था । जिसके अन्तर्गत पोथीयात्रा, घनश्याम जन्मोत्सव उल्लास के साथ मनाया गया था । कथा के बीच प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़े गादीवालाश्री आये थे ।

निम्न लिखित कार्यक्रम अनेक रुप में विधिवत पूर्ण किया गया था ।

धार्मिक :- अखंड धून, ११ करोड श्री स्वामिनारायण महामंत्र लेखन, समूह होमात्मक महापूजा, श्रीहरि यज्ञ, ठाकुरजी की नगर यात्रा जलयात्रा, पू. संतो द्वारा नंद रचित कीर्तन, भक्ति, भाईयो तथा बहनो के मंदिर में ठाकुरजी का छप्पन भोग, स.गु. स्वा. राजेन्द्रप्रसाददासजी द्वारा प्रकाशित सद्गुरु श्री महानुभावानंद स्वामी और ''श्रीहरिकृष्ण लीलामृत'' इस प्रकार दो ग्रन्थो का विमोचन किया गया था।

सामाजिक :- सर्वरोग निदान कैम्प के माध्यम से विशेषज्ञ डॉक्टरो द्वारा १०० रोगियो का निशुल्क जाँच की गई थी। रक्तदान द्वारा रेड क्रोस के द्वारा संतो, सांख्ययोगी बहनो द्वारा १६० रक्तदाताओने रक्तदान किया था। २८ ब्राह्मण बच्चो का यज्ञोपवीत तथा ब्रह्मचोरासी प्रति दिन ७०० गायो को घास चारा, कुत्तो को लड्डू भोजन, चीटीयोको चारा प्रतिदिन गांव की सफाई, व्यसन मुक्ति और बेटी बचाओ प्रदर्शन, वृद्ध वंदना समारोह दिव्यांगो की ट्राईसायकिल सिलाई मशीन का वितरण, गांव के युवक, मंडल द्वारा २५० जितने सव्यं सेवको द्वारा गांव के तथा बाहर के (दिव्यांगो सहित) को भोजन खिलाना था। तथा बर्तन धोना इस कारण से प्रसाद लेने में भीड कम लगती थी। यह समस्त सम्प्रदाय के लिये प्रेरक कारक है।

राष्ट्र सेवा :- कथा पारायण के प्रत्येक सत्र के अंत में राष्ट्र गान का खड़े होकर गायन करना। आतंकी हमला में शहीद हुए वीरो के परिवार हेतु रू। १,५०,०००/- की सहायता प्रदान करना।

सांस्कृतिक :- गाँव के नरनारायणदेव युवक, बाल, महिला और बालिका मंडल द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतिदिन रात में प्रसिद्ध कलाकारो द्वारा भव्य लोकडायरो, रासोत्सव, हास्य दरबार (डेलीये डायरा) जेसे कार्यक्रम उसी प्रकार मंदिर का उद्घाटन अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम था।

ता. २०-२-१९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संतमंडल के साथ आकर नूतन मंदिर में श्री स्वामिनारायण भगवान, श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव तथा गणपतिजी और हनुमानजी की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे पूर्ण की गयी। प्रसंगोचित सभा में आशीर्वाद देकर खुश हुए। उत्सव के बीच अहमदाबाद, मूली, सुरेन्द्रनगर, वडताल, गढडा, जुनागढ, आदि धामो से अधिक संख्या में विद्वान ब्रह्मनिष्ठ संत सांख्ययोगी बहने आयी थी। संत रसोई में प्रतिदिन संहितापाठ और व्याख्यानमाला माध्यम से सुंदर सेवा किये थे। युवक मंडल के सक्रिय कार्यकर्ता श्री हितेशभाई पटेल को साथ में रखकर महंत शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी (मोरबी) अच्छे से संचालन किये थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम का लाईव प्रसारण हमारी संस्कृति टी.वी. चैनल के माध्यम से किया गया था।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ट्रेन्ट शताब्दी महोत्सव

श्रीहरि समकालीन संत स.गु. परमात्मानंद स्वामी ने वढियार विस्तार में सत्संग किये थे। उसी परम्परा में अ.नि. स.गुज स्वामी कृष्णकेशवदासजी गुरु स.गु. स्वामी कृष्णप्रसाददासजी विरमगाम तालुका में ट्रेन्ट गाँव में भगवान श्री स्वामिनारायण को सर्वोपरी निश्चित किये। जिनके काष्ठ की अद्भूत कलाकृति वाला ४ मंजिला भव्य मंदिर का निर्माण कराये थे। जिसे १०० वर्ष पूरा होने पर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल की खुशी से अ.नि. स.गु. स्वामी कृष्णकेशवदासजीके शिष्य अ.नि. स.गु. शास्त्री स्वामी नरनारायणदासजी (जेतलपुर) के शिष्य पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी और स.गु. पू. शा. पी.पी. स्वामी जेतलपुर के सुंदर प्रयास से मार्गदर्शन में समग्र ट्रेन्ट गाँव के हरिभक्तो के आयोजन द्वारा ता. ५-२-१९ से ता. ११-२-१९ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर ट्रेन्ट का शताब्दी महोत्सव विधिवत मनाया गया था।

इस महोत्सव के अन्तर्गत श्रीमद् भगवत सप्ताह कथा सम्प्रदाय के प्रसिद्ध कथाकार पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) के वक्तापद से हजारो भक्तोने कथा श्रवण करके जीवन धन्य किये। अनेक उत्सवो में जैसे भव्य पोथीयात्रा, भव्य शोभायात्रा, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव श्री वामन जन्म, श्री रामजन्, गोवर्धन लीला, रुक्मणी विवाह, समाज लक्षी रक्तदान कैम्प, मेडिकल जाँच, तथा रात्रि में सुंदर कार्यक्रम हुए।

तीन दिन का महाविष्णुयज्ञ का प्रारम्भ प.पू. लालजी महाराज के कर कमलो से पूर्ण हुआ। इस अवसर पर भव्य महिला शिबिर का आयोजन प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के अध्यक्ष स्थान से भव्य रुप से पूर्ण हुआ। जिस में बढियार पंथक के हजारो बहनोने लाभ लेकर धन्य हुए। ठाकुरजी को प्रतिदिन अनेक अन्नकूट रखा जाता था।

ता. ११-२-१९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ट्रेन्ट गाँव में आगमन हुआ संत हरिभक्तो द्वारा भव्य स्वागत समैया किया गया था। निज मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक वेदोक्त विधिसे की गयी थी। तथा सभा में कथा की पूर्णाहुति यजमान परिवार के साथ की गयी थी। धर्मकुल पूजन, संत पूजन, यजमान परिवार द्वारा किया गया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथो द्वारा यजमान परिवार और स्वयं से सेवको को अलौकिक भेट के साथ आशीर्वाद दिये थे। संतो की प्रेरकवाणी का सभीने लाभ उठाया था।

शताब्दी समारोह का वीणा इस गाँव के १०० जितने युवको ने नित्य मंदिर आखर किया था। प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ सभीने ग्रुप में फोटो खिचवाये थे। अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने समस्त सभा को आशीर्वाद देकर खुश हुए।

इस अवसर पर अपने नये धामो के संत-महंत तथा सांख्ययोगी माताओ ने विशाल संख्या में भाग लिया था।

पूरे उत्सव में सेवा करने वाले संतो में महंत श्री के.पी. स्वामी (जेतलपुर), महंतश्री नारायणप्रसाद स्वामी (मेहसाना), वी.पी. स्वामी (अंजली), देव स्वामी (माणसा), ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (छपैया), शा. हरिप्रकाश स्वामी (कलोल-मकनसर) आदि संत आये थे। स्वयं सेवक महिला मंडल आदि

सभी लोगोने प्रसंशनीय सेवा प्रदान किये थे।(शा. भक्तिनंदनदास - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाणा दशाब्दी पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू. महंत स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से तता मेहसाना मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी उत्तमचरणदसाजी तथा स.गु. स्वामी नारायणप्रसाददासजी के सुंदर प्रबन्धद्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाना का दशाब्दी महोत्सव ता. १७-२-१९ से २१-२-१९ तक उल्लास पूर्वक मनाया गया था। जिस में श्रीमद् भागवत स्कन्धत्रि दिवसीय कथा स.गु. शा. स्वामी देवस्वरुपदासजी (माणसा महंतश्री) के वक्तापद से सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर रात में अनेक कार्यक्रम का सुंदर आयोजन सुखदेव स्वामी का संचालन द्वारा हुआ था । प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री आये थे। और समस्त बहनो को दर्शन आशीर्वाद दिये। तीर्थ स्थानो से सांख्ययोगी बहने तथा तीर्थो से आये थे।

ता. २०-२-१९ को प्रतिदिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आये थे। और ठाकुरजी की षोडशोपचार करके कथा और यज्ञ की पूर्णाहुति किये थे। सभा में पाटोत्सव के यजमान प.भ धर्मेन्द्रसिंह चंद्रसिंह राठोड परिवार द्वारा धर्मकुल का पूजन संत पूजन किये थे। पूरे सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्रीन आशीर्वाद प्रदान किये।

सेवा करने वाले सभी भाई-बहनो की सेवा की प्रशंसा की गयी। ठाकुरजी का अन्नकूट आरती का दर्शन करके प्रसंगपूर्ण हुआ।(हितेन्द्रसिंह - मेहसाना)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजलि का १२ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू. महंत स.गु.शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर महंतश्री), पू.शा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन मेंओर अंजली मंदिर के महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली का १२ वाँ पाटोत्सव धुमधाम से मनाया गया। जिसमें पाँच दिन का श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण, अनेक उत्सव, गादी अभिषेक, ठाकुरजी का अभिषेक, शाकोत्सव, अन्नकूट आदि अवरो को धुमधाम से मनाये थे। पाटोत्सव के यजमान प.भ. ठक्कर ललितभाई जगजीवनभाई, पुत्र राजेशभाई, कमलेशभाई, पौत्र मेहुल, करण (वासणा) आदि परिवार थे।

ता. १८-२-१९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक वेदोक्त विधिसे हुआ था । कथा की पूर्णाहुति के बाद यजमान परिवार द्वारा धर्मकुल परिवार का पूजन, संत पूजन हुआ था। तीर्थो से आये संतो ने प्रवचन दिया । तत्पश्चात प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद प्रदान किये। इस अवसर पर समस्त महिला मंडलको दर्शन देकर आशीर्वाद का सुख दिये। प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे। अन्त में अन्नकूट का दर्शन करके सभी लोग धन्य है। (कोठारीश्री - अंजलि मंदिर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंमची समैयो

मूलीधाम में बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के शुभ सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से तथा प.पू. १०८ लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के खुशी से उसी प्रकार मूली मंदिर के पू. महंत शा. स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी द्वारा रखे गये मूली मंदिर में स्थित श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का १९६ वाँ पाटोत्सव महोत्सव वसंत पंचमी का समैया माधसुद-५ वसंत पंचमी के ता. १०-२-१९ के दिन हर्षोल्लास से मनाया गया था।

इस अवसर पर तीन दिन कथा शा. स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी और शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी के वक्ता पद से हुई।

समस्त पाटोत्सव के यजमान अ.नि. प.भ. अरजणभाई वशरामभाई पटेल परिवार तथा रंगोत्सव यजमान प.भ. जयेशभाई पटेल परिवारने लाभ लिया।

समैया अवसर पर श्रीहरियज्ञ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, संतो द्वारा श्री राधाकृष्णदेव आदि देवो का महाभिषेक, अन्नकूट, शिक्षापत्री पूजन, स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी का जन्मोत्सव इत्यादि सुंदर रुप से मनाया गया था।

श्रीहरिने सर्व प्रथम मुलीपुर में भोगवती नदी के किनारे घोला पहाड के उपर वैठकर स्नान किये थे। जहाँ पर धर्मकुल के हजूरी पार्षद श्री केसर भगत ब्रह्ममहल बनाये थे। जो भूकम्प में नष्ट हो गया था। जिसका जीर्णोद्धार मूली मंदिर द्वारा पू. महंत स्वामी और हजूरी पार्षद श्री वनराज भगत, महादेव भगत और भरत भगत की प्रेरणा से सुंदर ब्रहम महल का पुनः निर्माण पूरा होने से प.पू. महाराजश्री के हाथो द्वारा जिसका उद्घाटन किया गया । ब्रह्मानंद सभा मंडप में प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभा में प्रशस्ति प्रदान किये।

दोपहर १२ बजे मूली मंदिर के विशाल परिसर चौक में सुंदर श्वेत वस्त्र साफा धारण करके प.पू. लालजी महाराजश्री के शुखे फूलो के रंग से ३०,००० आश्रित भक्तो के उपर रंग उडाकर करके श्रीहरि के समय में होने वाले रंगोत्सव का दर्शन दिखाई देने लगा था। प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भा आये थे। और बहनो को आशीर्वाद प्रदान किये थे। तीर्थ स्थानो से संत और सांख्ययोगी बहने भी आई थी। महंत स्वामी भक्तिनंदनदासजी (मोरबी) और पार्षद भरत भगत ने सुंदर सभा का संचालन किये थे।

पूरे रसोई की व्यवस्था कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी ने किया था। और सेवा व्रज स्वामी हरिकृष्ण स्वामी और अनिरुद्ध स्वामी जुडे थे।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलांटा शिक्षापत्री जयंती

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के श्रीजीस्वरुप स्वामी के प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलांटा ठाकुरजी के समझ माघ सुद-५ वसंत पंचमी को श्रीमद् शिक्षापत्री जयंती का सभी हरिभक्तो संतो ने पूजन-अर्चन किये थे ।छोटे बच्चो द्वारा तैयार शिक्षापत्री की रजत तुला विधिवत रुप से पूर्ण किये । हरिभक्तोने सुंदर सेवा किये थे । सभा में श्रीमद् शिक्षापत्री के पाठ को हरिभक्तो ने समूह में किये थे । (एटलांटा समस्त हरिभक्त)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया शिक्षापत्री जयंती

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत स.गु. शास्त्री स्वामी विश्वविहारीदासजी की प्रेरणा से हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में वसंत पंचमी श्रीमद् शिक्षापत्री जयंती को शाम ५ से ८ के बीच सभा में शिक्षापत्री का पूजन किया गया था । यजमान परिवार ने भाग लिया था । स्वामीजीने कथा वार्ता समूह में शिक्षापत्री वाचन करके ठाकुरजी की आरती नियम करके सभी लोग प्रसाद लेकर धन्य हुए । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्यूस्टन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के पार्षद श्री की प्रेरणा से अपने ह्यूस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर पर रविवार २० जनवरी को प्रात: १० बजे से ७ बजे तक अपने हरिभक्त और गुजराती समाज के लगभग ४००० जितने भाविक भक्तोने पहलीबार पतंगोत्सव मनाये थे। ठाकुरजी का दर्शन करके सभी भाव विभोर हो गये । रक्तदान के कैम्प में लोगोने रक्तदान किया था । सभा में प्रमुखश्री द्वारा तमाम सेवा की गयी थी । यजमान और सेवा करने वाले का सन्मान किया गया था । (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में ।

From-IV (see Rule : 8)

१.	प्रकाशक	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
४.	संपादक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव गादी के अधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१

मैं शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य है।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदाबाद-१ (प्रकाशक की साईन)

મહંત શાસ્ત્રી સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી

Mahant Shastri Swami Harikrishnadasji

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર
કાલુપુર, અમદાવાદ-૩૮૦ ૦૦૧.

Shree Swaminarayan Temple
Kalupur, Ahmedabad-380 001.

Phone : (079) 22132170, 22136818 • Fax : (079) 22176992

समस्त सत्संग की जानकारी हेतु

सभी सत्संग समाज को सूचित किया जाता है कि टांकिया में रहने वाले व्यक्ति स्वामी माधवप्रियदास (पूर्वाश्रम का नाम महिपालसिंह राजेन्द्रसिंह वाघेला - निवास माणसा) गुरु स्वामी सिद्धेश्वरदासजीने उनके व्यवहार के बारे में संस्था द्वारा कभी-कभार चेतावनी देने के बावजूद भी उनमें सुधार नही आया । वर्तमान स्थिति में डांगरवा गाँव के हरिभक्तो द्वारा प्राप्त सूचना अनुसार ता. १-३-१९ के दिन दोपहर लगभग १२ बजे डांगरवा गाँव से एक विवाहित औरत के साथ मंदिर छोडकर फरार हो गये है।

तत्काल ज्ञात होने पर ता. १-३-१९ के दिन उन्हे श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के त्यागी पत्रक में से त्यागी के रुप में नाम हटा दिया गया है।

विशेष : आप सभी को अवगत किया जाता है कि उनके साथ कोई भी संस्थाकीय लेन-देन नही करे ।इस बारे में संस्था की कोई जिम्मेदारी नही रहेगी ।

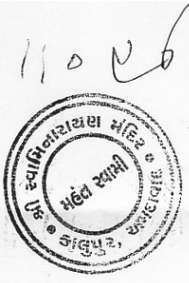

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) पोरडा (कच्छवाल) नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करके सांस्कृतिक कार्यक्रम को देखते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री. (२) हुंडाल नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा दर्शन का लाभ लेते हुए हरिभक्त. (३) मजपुरा मंदिर में पाटोत्सव अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री. (४) कोलवडी मंदिर में पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री (५) मालठी (व्यास) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर संत हरिभक्तों की सभा. (६) वांसेचा मंदिर में पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए कोलवड़ के संत. (७) भीमपुरा मंदिर के पाटोत्सव और ज्ञानोत्सव अवसर पर युवक मंडल के साथ अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी और गांधीनगर के संत मंडल. (८) मगपुरा बिजापुर मंदिर कथा अवसर पर सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री.

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

(१) अपने एटलान्टा (यु.एस.ए.) मंदिर में शिक्षापत्री जयंती के अवसर पर शिक्षापत्री का पूजन (२) अपने बाल्टीमोर (यु.एस.ए.) मंदिर में शाकोत्सव (३) हमारे सीनेमीन्स (यु.एस.ए.) मंदिर में शाकोत्सव तथा भारत के शहीद वीरो के लिये फंड इकठ्ठा करना तथा कैन्डल मार्च (४) पुलवामा में शहीद हुए जवानो की आत्मा की शांति के लिये अपने कालुपुर मंदिर में धुन करते संत लोग-हरिभक्त

www.swaminarayan.in info@swaminarayan.in

Follow Us @ nndkalupurmandir

Daily Darshan Whatsapp no. +91 9909 967104

Praful Kharsani